



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

दुःखवति दुःखी
इह दुःखकडेणं।
अपने दुःख से दुःखी बना
हुआ प्राणी दुःख का ही
अनुभव करता है।

नई दिल्ली

● वर्ष 25 ● अंक 4 ● 30 अक्टूबर - 5 नवंबर, 2023



प्रत्येक सोमवार

● प्रकाशन तिथि : 28-10-2023 ● पेज : 16

₹10 रुपये

मन की स्थिरता के लिए तन की स्थिरता भी आवश्यक : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन, २३ अक्टूबर, २०२३

अश्विन शुक्ला नवमी, शारदीय नवरात्रि की समाप्ति और नवाह्निक जप अनुष्ठान संपन्नता की पर परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रवचन से पूर्व नौवें दिन का जप अनुष्ठान करवाया। सधन साधना शिविर भी संपन्नता की ओर है।

अध्यात्म के सुमेरू आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आर्ष वाणी की अमृत वर्षा करते हुए फरमाया कि मन के बारे में प्रश्न किया गया कि मन निर्वृत्ति कितने प्रकार की होती है? गौतम के नाम उत्तर दिया गया है कि मन निर्वृत्ति चार प्रकार की होती है—सत्य, असत्य, सत्य-मृषा और असत्या-मृषा मन:निर्वृत्ति।

भाषा और मन इन दोनों में भी बहुत निकटता प्रतीत हो रही है। आगम में भाषा और मन पर्याप्त को एक में ही समाविष्ट किया गया है। कई बातें हम मन में ही रख लेते हैं, उसको भाषा का जामा नहीं पहनाते हैं। मन की मन में ही रह जाती है। हम सत्य विषयक चिंतन कर लेते हैं तो असत्य विषयक चिंतन कर लेते हैं। कोई सत्य-असत्य मिश्रित चिंतन करने वाला भी हो सकता है। व्यवहारात्मक-निर्देशात्मक चिंतन भी हो सकता है।

मन का होना हमारे लिए बहुत बड़ी उपलब्धि है। मन होने वाले प्राणी तो बहुत कम हैं। हम तो अनंत प्राणियों से ऊपर हैं।



मन की चंचलता भी हमारे में होती है। हम संज्ञी पंचेन्द्रिय प्राणी हैं। मन का होना एक विकास का द्योतक है। यह भी क्षयोपशम का भाव है। हमें जो यह मनस्विता प्राप्त है, यह दुर्गति में ले जाने में भी निमित्त बन सकती है तो स्वर्ग और मोक्ष में ले जाने में भी मनस्विता निमित्त हो सकती है। यह तो एक प्रकार की शक्ति है, इसका उपयोग कैसे-क्या करते हैं, यह खास बात है।

मन सुमन रहे। केवलज्ञानी नो संज्ञी-नो असंज्ञी होते हैं। असंज्ञी होना एक विकास की सी स्थिति है। संज्ञी होना विकास की बात है। नो संज्ञी-नो असंज्ञी होना उससे भी बड़ी बात है। एक विकसित स्थिति है। हम भी नो संज्ञी-नो असंज्ञी तेरहवें गुणस्थान वाले बन जाएँ। चार प्राप्त इंद्रियों तक अमनस्कता है। मन है तो पाँचवीं इंद्रिय प्राप्त होगी। वैसे पंचेन्द्रिय में भी

संज्ञी-असंज्ञी दोनों होते हैं।

हमारा मन सत्यता के साथ जुड़कर निर्वधता को साथ रखे। मन की चंचलता को हम कम करें। मन की चंचलता को कम करने के लिए तन की चंचलता पर ध्यान देना चाहिए। शरीर की स्थिरता का अभ्यास सही तो मन की स्थिरता हो सकती है। शरीर से स्थिर और शिथिल रहे। सधन साधना शिविर तो आज समाप्त हो रहा है,

पर आगे भी वे शिविरार्थी तन की शिथिलता रखने का प्रयास करें। वाणी की भी अप्रयोग की स्थिति भी जब ध्यान करें तब रहे। ध्यान में हमेशा सीधा बैठें।

मन की चंचलता बढ़ाने वाले मूल तो राग-द्वेष हैं। भाव आता है, तो मन के पंखे घूमते हैं। श्वास भी लंबा चले। इससे चंचलता में कमी आ सकती है। हम प्रयास के द्वारा मन की चंचलता कम कर सकते हैं। मन को साधने का प्रयास करें।

सधन साधना शिविर के संदर्भ में महासभा की ओर से अशोक तातेड़ ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। शिविरार्थियों ने गीत की प्रस्तुति दी।

मुख्यमुनि महावीर कुमार जी ने सधन साधना शिविर के अनेक प्रसंगों एवं उसके महत्व को समझाया। पूज्यप्रवर ने भी आशीर्वचन फरमाया।

अमृतवाणी के मंचीय कार्यक्रम रूपचंद दुगड़ ने अमृत वाणी के विषय में जानकारी दी। अमृतवाणी स्वर संगम का फाइनल आयोजन आज शुरू हुआ। इसके संयोजक पन्नालाल पुगलिया ने इसकी जानकारी दी। अमृतवाणी स्वर संगम के प्रायोजक उम्पेद दुगड़ एवं प्रवचन प्रसारण के सहयोगियों का अमृतवाणी द्वारा सम्मान किया गया। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

सच्चाई की देवी सदैव हमारे मन में रहे : आचार्यश्री महाश्रमण



नंदनवन, २२ अक्टूबर, २०२३

मोक्षमार्ग के पथदर्शक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने भगवती सूत्र की विवेचना करते हुए फरमाया कि जैन शास्त्रों में बत्तीस

आगम सम्मत है। उनमें से एक यह भगवई विवाग पण्णति है। इन ग्रंथों में तत्त्व बोध संग्रहीत किया गया है। जीवन जीने का पथ दर्शन प्राप्त किया जा सकता है।

भगवती सूत्र में भाषा के बारे में प्रश्न किया गया है कि भाषा-निर्वृत्ति कितने प्रकार की प्रज्ञप्त है? भाषाएँ अनेक प्रकार की होती हैं, पर यहाँ हम भाषा किस प्रकार बोलते हैं, इस बारे में पूछा गया है कि आदमी भाषा कितने रूपों में बोल सकता है। उसके यहाँ चार प्रकार बताए गए हैं—सत्य भाषा निर्वृत्ति, असत्य भाषा निर्वृत्ति, सत्य-मृषा भाषा निर्वृत्ति और असत्या मृषा भाषा निर्वृत्ति।

आदमी कभी सत्य भाषा बोल लेता है, कभी असत्य भाषा भी बोल देता है। साधु को तो कभी झूठ-मृषा नहीं बोलना पर गृहस्थ झूठ बोलने का त्याग नहीं कर सकता। सत्य में भी निरवद्य सत्य हो। सत्य भाषा भी जो प्रिय हो। वैसा सत्य मत बोलो जो अप्रिय हो। प्रिय भी असत्य मत बोलो। यह शाश्वत धर्म है।

हर सत्य हर जगह बोलना आवश्यक नहीं है। सत्य बात भी कहाँ बोलनी है, कहाँ नहीं बोलनी यह विवेक साधु में हो। मीठा बोलना सामने वाले को वश में कर लेता है। बोलो तो सत्य बोलो, किसी के बारे में झूठ मत बोलो। हमें भाषा लब्धि-निर्वृत्ति प्राप्त है। आदमी क्रोध, लोभ, भय और हास्य के कारण झूठ बात बोल सकता है। इससे आदमी अपराध भी कर सकता है।

राग और द्वेष कर्म बंध के बीज हैं। वीतराग राग-द्वेष से मुक्त होता है। गीता में भी स्थितप्रज्ञ शब्द आया है। यह भी वीतराग का ही स्वरूप है। जो अपनी आत्मा में संतुष्ट है, वह स्थितप्रज्ञ है। प्रिय मिल जाए तो सुखी मत बनो और अप्रिय मिल जाए तो द्वेष मत करो। लाभ-अलाभ आदि योगों में सम रहो। काम-क्रोध क्षीण हो जाने

पर आदमी अपराध मुक्त हो जाता है।

जैन दर्शन में आत्मवाद, कर्मवाद के साथ पुनर्जन्म के अनेक प्रसंग मिल जाते हैं। जैसे आदमी जीर्ण हुए कपड़ों को छोड़कर नया कपड़ा पहनता है, यही बात पुनर्जन्म की है। सत्य-मृषा भाषा यानी मिश्र भाषा। असत्य मृषा भाषा व्यवहार की भाषा होती है। गृहस्थ कम से कम किसी पर झूठा आरोप तो न लगाए। मृषा भाषा से दूसरों को कष्ट में डालने का प्रयास न करें।

कृष्णाजी जो सुप्रीम कोर्ट से जुड़े हैं, आज यहाँ पधारे हैं। न्याय तो एक प्रकार का मंदिर है, न्यायाधीश उसकी मूर्ति है। हमारी चेतना में शुद्धता रहे। सच्चाई की देवी हमारे मन में रहे। हम मृषा भाषा से बचने का प्रयास करें तो यह हमारे लिए ठीक हो सकता है। (शेष पृष्ठ २ पर)



मासखमण तप अभिनंदन के आयोजन

शाहदरा, दिल्ली

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में ओसवाल भवन में मंजु देवी बैद के आयंबिल मासखमण तप का सभा द्वारा तपोभिनंदन कार्यक्रम आयोजित हुआ।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि तपस्या वह मशाल है जो जीवन को सहजता, स्वस्थता, निर्मलता व पवित्रता की ज्योति से ज्योति कर देती है। तपस्या से जब व्यक्ति का अंतर्मन अनुप्राणित होता है, तब आनंद की अनुभूति का द्वारा उद्घाटित हो जाता है। सरलता व सौम्यता से तपस्वी का चेहरा चमकने लगता है। आत्मबल, संकल्पबल, मनोबल तथा साधु-साध्वियों की प्रेरणा तथा पारिवारिकजन का सहयोग-ये तीनों धाराएँ जब एक साथ मिलती हैं, तब मासखमण जैसी तपस्याएँ होती हैं।

मंजु बैद ने आयंबिल का मासखमण कर दृढ़-संकल्पशक्ति का परिचय दिया है। आयंबिल तप का जैन परंपरा में विशिष्ट स्थान रहा है। आयंबिल तप के द्वारा अनेक विघ्न-बाधाओं को दूर किया जा सकता है। बहन का यह तप आत्मिक उत्थान का हेतु बने।

डॉ० साध्वी सुधाप्रभा जी ने साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी द्वारा प्रदत्त मंगल संदेश का वाचन किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी समत्वयशा जी ने किया। साध्वीवृंद ने तप अनुमोदना गीत का संगान किया।

अनुमोदना के क्रम में सभामंत्री सुरेश सेठिया, ओसवाल समाज के अध्यक्ष आनंद बुच्चा, पूर्वी दिल्ली तेमम अध्यक्ष सरोज सिपानी, ऋषभ व शिल्पी बैद, बालिका चार्वी बैद, उपासिका चंद्रकला लुणिया ने अपने विचार व्यक्त किए।

साउथ कोलकाता

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा के तत्वावधान में सुरुचि सुभाष नाहटा के मासखमण तप अभिनंदन का कार्यक्रम तेरापंथ भवन में आयोजित हुआ। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि आत्म शुद्धि के चार उपाय बताए हैं-सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन, सम्यक् चारित्र, सम्यक् तप। जीव ज्ञान से पदार्थों को जानता है। दर्शन से श्रद्धा करता है, चारित्र से निग्रह करता है व तप से परिशुद्ध होता है। तप अध्यात्म साधना का उज्ज्वल पहलू है। तप आत्म मंदिर की पवित्र दीपशिखा है।

तप से काया कुंदन होती है। तप से जन्म जन्मांतर के कर्म क्षय होते हैं। तप की महिमा अपरंपार है। हर व्यक्ति तप की साधना नहीं कर सकते हैं। शूरवीर व्यक्ति ही तप की आराधना कर सकते हैं।

धन्य हैं वे जो मासखमण की तपस्या करके, आत्मा का कल्याण करते हैं। जिनशासन की प्रभावना करते हैं। सुरुचि नाहटा ने मासखमण की तपस्या करके जिनशासन व परिवार का गौरव बढ़ाया। मुनि परमानंद जी, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष विनोद चोरड़िया ने विचार रखे। तेरापंथ सभा के उपाध्यक्ष विजय बावलिया ने अभिनंदन पत्र का वाचन किया। सुशीला पुगलिया ने साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी द्वारा प्रदत्त संदेश का वाचन किया। तेमम की अध्यक्ष पदमा कोचर ने शुभकामनाएँ प्रस्तुत की। सुभाष नाहटा आदि परिजनों ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। तेरापंथ सभा द्वारा तपस्वी बहन का सम्मान किया गया।

बीदासर

समाधि केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी रचनाश्री जी के सान्निध्य में सददारशहर के 99 वर्षीय बालक उदित डागा के मासखमण के तप अभिनंदन कार्यक्रम का आयोजन हुआ। साध्वी नमनप्रभा जी के संसारपक्षीय तपस्वी भाई उदित और डागा परिवार को संबोधित करते हुए साध्वीश्री जी ने कहा कि तपस्या उतनी ही जरूरी है जितनी माँ की जरूरत होती है। माँ के बिना संसार में नहीं आ सकते हो, वैसे ही तपस्या के बिना संसार से

सत्वाई की देवी सदैव हमारे...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सुप्रीम कोर्ट के रिटायर्ड जज पी०एन० कृष्णा पूज्यप्रवर की सन्निधि में टीपीएफ की कॉन्फ्रेंस के अंतर्गत पहुँचे। पी०एन० कृष्णा ने कहा कि चार बातें आहार, निद्रा, भय और मैथुन से मनुष्य और पशु में अंतर किया जा सकता है। मनुष्य धर्म के अंतर्गत रहकर अपनी क्रिया करता है। कर्म करते रहो-फलों की चिंता मत करो। आत्म-दर्शन ही आत्म सुख है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि आशंका से व्यक्ति में नकारात्मक भाव आ जाते हैं और वह अनर्थ कर बैठता है। विकास के लिए आवश्यक है कि हम सकारात्मक बनें। जितना चिंतन हमारा सकारात्मक होगा हम लक्ष्य के निकट पहुँच जाएँगे। सकारात्मक व्यक्ति का मनोबल मजबूत होता है, उसको कोई मार्ग से विचलित नहीं कर सकता।

व्यवस्था समिति अध्यक्ष मदनलाल तातेड़ ने स्वागत रूप में अपनी भावना अभिव्यक्त की। टीपीएफ एवं व्यवस्था समिति द्वारा पी०एन० कृष्णा का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम से पूर्व पूज्यप्रवर ने अनुष्ठान-जप करवाया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

मुक्त भी नहीं हो सकते हो।

साध्वी नमनप्रभा जी ने अपने विचार व्यक्त कर अपने संसारपक्षीय भाई को दीक्षा की प्रेरणा दी। शासनश्री साध्वी मदनश्री जी एवं साध्वीवृंद ने गीत का मधुर संगान किया। सभा की ओर से कोषाध्यक्ष विमल लिंगा, अजित बैंगानी, तेयुप की ओर से नवदीप बैंगानी ने विचार रखे। संजय, कन्या मंडल ने गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का मंगलाचरण महिला मंडल ने किया। कार्यक्रम का संयोजन साध्वी गीतार्थप्रभा जी ने किया।

पूर्वाचल-कोलकाता

तेयुप, पूर्वाचल-कोलकाता द्वारा भजन मंडली पूर्वाचल स्वर लहरी के साथ सरला देवी बैंगानी (धर्मपत्नी प्रेमचंद बैंगानी, साउथ कोलकाता निवासी) के मासखमण तप की अनुमोदना कार्यक्रम रखा गया।

पूर्वाचल स्वर लहरी के गायक मनोज चंडालिया, राजीव खटेड़, हेमंत बैद, हर्षित मालू एवं विशेष आमंत्रित गायक डॉक्टर अरिहंत सिंधी आदि गायकों ने स्वर वर्षा करते हुए तप की अनुमोदना की।

कार्यक्रम में परिषद के संस्थापक मंत्री रवि दुगड़, निवर्तमान अध्यक्ष राजीव खटेड़, मंत्री सिद्धार्थ दुधेड़िया, संगठन मंत्री हेमंत चपलोट एवं कार्यकारिणी सदस्य गौतम सेठिया उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में समाज के काफी गणमान्य लोगों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन स्वर लहरी के राजीव खटेड़ ने किया।

हम इंद्रियों का संयम रखने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन, 9 अक्टूबर, 2023

तेरापंथ के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आगम वाणी की अमृत वर्षा करते हुए फरमाया कि भगवान महावीर के उपपात में ब्राह्मण सौमिल की उपस्थिति और सौमिल ब्राह्मण ने परम प्रभु से एक प्रश्न यात्रा के बारे में पूछा था। प्रभु ने यात्रा पर प्रकाश डाला था।

दूसरा प्रश्न था कि आप यमनीय को मान्य करते हैं क्या? प्रभु ने यह भी स्वीकार किया था कि यमनीय मुझे मान्य है। प्रश्न पूछा गया-यमनीय होता क्या है? तो परम प्रभु ने फरमाया कि यमनीय दो प्रकार का होता है-इंद्रिय यमनीय और नो-इंद्रिय यमनीय। यमनीय यानी नियंत्रण-वश में रखना। संयमन करना।

इंद्रिय यमनीय यह कि मेरी जो इंद्रियाँ हैं श्रोतेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय जीभेन्द्रिय और स्पर्शनेन्द्रिय ये सक्षम होकर भी इंद्रियाँ मेरे वश में रहती हैं। वह मेरा इंद्रिय यमनीय है। नो-इंद्रिय यमनीय जो इंद्रियों से अलग है। क्रोध, मान, माया और लोभ ये विच्छिन्न होने से उदिरित नहीं होती है, वह नो-इंद्रिय यमनीय है कि कषाय का मेरे उदय नहीं है।

वीतराग भगवान के तो यमनीय होता ही है, पर प्रश्नकर्ता के भी यमनीय हो। पाँच इंद्रियों को वश में कर लेना इंद्रिय यमनीय है। खमासमणों की पाटी में ये शब्द आते हैं। सधन साधना शिविर के संभागी हैं। इस शिविर में भी इंद्रिय संयम की प्रेरणा दी जाती है। गृहस्थ के भी एक सीमा तक इंद्रिय-संयम अपेक्षित है।

इंद्रियाँ हमें बाह्य जगत से जोड़ने वाली होती है। आचार्य भिक्षु ने तो अपने ग्रंथ इंद्रियवादी की चौपाई में इंद्रिय संयम के बारे में बताया है। हम इंद्रियों का संयम रखने का प्रयास करें। बिना अपेक्षा किसी पदार्थ के प्रति रागात्मक आकर्षण न हो। मनोज्ञ वस्तु लग रही है, उसको आज के लिए छोड़ दो। कषाय हमारा प्रतनू हो जाए। इनका भी संयम करने का प्रयास करना चाहिए। सधन साधना में ये दोनों प्रयोग सध जाएँ तो हमारे लिए श्रेयस्कर हो सकता है।

प्रवचन से पूर्व पूज्यप्रवर ने नवाहिनक अनुष्ठान का जप करवाया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समणया कि हम विवेक से हेय-उपादेय का आचरण करें।



रक्तदान अमृत स्मरणोत्सव के आयोजन

पर्वत पाटिया

तेयुप द्वारा जनरल पोलिटैक्स प्रा०लि० में रक्तदान अमृत स्मरणोत्सव के तीसरे कैंप का उद्घाटन नमस्कार महामंत्र के सामूहिक संगान से हुआ। कार्यक्रम में जैद भाई, हर्षद भाई, रितेश भाई, अभिमन्यु सर, अनूप भाई, मनोज भाई व जनरल पोलिटैक्स परिवार की टीम उपस्थिति रही।

रक्तदान अमृत स्वर्णोत्सव के तीसरे कैंप में 9५७ यूनिट रक्त संग्रह हुआ। तेयुप, पर्वत पाटिया के अध्यक्ष दिलीप चावत, मंत्री पवन बुच्चा, एमबीडीडी के पर्यवेक्षक प्रदीप पुगलिया, कैंप के संयोजक अजय बोधरा, अमित बुच्चा, सुरेंद्र जैन की उपस्थिति रही। तेयुप अध्यक्ष दिलीप ने अपने भावों के द्वारा जनरल पोलिटैक्स परिवार का आभार व्यक्त किया एवं तेयुप द्वारा मोमेंटो से सम्मान किया गया।

सरदारपुरा

अभातेयुप के तत्वावधान में तेयुप द्वारा रक्तदान स्मरणोत्सव-2023 के तहत छोटे बड़े कोरपोरेट्स में रक्तदान शिविर कैंप आयोजित किए गए। बोरानाड स्थित एसीएन एक्सपोर्ट्स में बैंगानी परिवार के प्रायोजन में व रोटरी ब्लड सेंटर में सिम्बायोसिस एसिस्टेंट के प्रायोजन व सहयोग से रक्तदान शिविर का आयोजन हुआ। शिविर में रोटरी ब्लड बैंक की टीम ने अपनी सेवा दी। तेयुप, सरदारपुरा के प्रयास से दोनों शिविरों में रक्तदाताओं ने उत्साह से भाग लिया।

एसीएन एक्सपोर्ट में आयोजित कैंप में 908 लोगों ने रक्तदान किया। वहीं रोटरी ब्लड बैंक में आयोजित कैंप में 9 एसडीपी डोनेशन के साथ कुल ५४ यूनिट रक्तदान हुआ। तेयुप, सरदारपुरा सहमंत्री-प्रथम धीरज बैंगानी ने आगामी कार्यक्रम की जानकारी दी।

समर्पण और समता का रूप - साध्वी पावनप्रज्ञा

□ समणी अक्षयप्रज्ञा □

समर्पण, समता और प्रसन्नचित्त की त्रिवेणी में स्वयं को पुनीत करने वाली साध्वी पावन प्रज्ञा जी, जिन्होंने मृत्यु को महोत्सव बना दिया और जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के इतिहास में अपना गौरवमय स्थान बना लिया।

सन् १९५६ में श्री मांगीलालजी व सुंदरदेवी के कुल में मारवाड़ की वैराग्यमयी उर्वर धरा टापरा में पुष्पा का जन्म हुआ। मात्र १५ वर्ष की उम्र में जसोल निवासी श्री पूनमचंद जी चोपड़ा के सुपुत्र खीमराजजी चौपड़ा के साथ पाणिग्रहण हुआ। लगभग १८ वर्षों के बाद खीमराजजी का अचानक एक्सीडेंट हो गया और कुछ दिन 'कोमा' में रहने के पश्चात हमेशा के लिए अलविदा हो गए। संयोगवश पुष्पा के कोई संतान भी नहीं थी। निराशा व शोक के क्षणों में आशा का दीप जलाया समणी स्मितप्रज्ञा जी (वर्तमान साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी) ने कहा संसार तो देख लिया अब संन्यास की ओर आगे बढ़ो-इस प्रकार वैराग्य भावना का संचार किया।

सही कार्य, सही वक्त अर्थात् सफलता। प्रयास सफल हुआ और मुमुक्षु के रूप में पुष्पा ने लगभग ४ वर्षों तक पारमार्थिक शिक्षण संस्था में साधना की। तत्पश्चात् सन् १९६७ में हेम द्विशताब्दी के अवसर पर गणाधिपति गुरुदेवश्री तुलसी की सन्निधि में आचार्य महाप्रज्ञ जी के मुखारविंद से समणी अक्षयप्रज्ञा जी की अग्रजा ने समणी पावनप्रज्ञा बन समण श्रेणी में प्रवेश किया।

लगभग २६ वर्षों तक समणी पावनप्रज्ञा जी ने समण श्रेणी में साधना की। उनके जीवन विकास में समण श्रेणी की समस्त नियोजिका व संपूर्ण समणी परिवार, समणी मधुरप्रज्ञा जी से लेकर नवदीक्षित समणीजी की आत्मीयता व भरपूर सहयोग मिला। बीमारी में अच्छा आलंबन मिला। इनकी जीवनशैली **Planning, Punctuality और Priorety** पर आधारित थी, जिसके केंद्र में **Time Management** इसलिए जप, प्रतिदिन चौबीसी, स्वाध्याय, ध्यान, अनुपूर्वी, योगासन, प्राणायाम आदि नित्य क्रम था। स्वच्छतायुत स्वावलंबी जीवन था। सिलाई, रंगाई आदि में निपुणता के साथ प्रत्येक कार्य में उत्साह नजर आता। संघनिष्ठा, गुरुनिष्ठा, आचारनिष्ठा, अद्भुत थी। निर्धारित आचार संहिता के प्रति सतत जागरूक थे।

साध्वी पावनप्रज्ञा जी के जीवन में असाता वेदनीय का योग कुछ ज्यादा रहा। फिर भी अपनी शारीरिक अवस्था के साथ मैत्री करते हुए अपनी साधना में संलग्न रहीं। अचानक जीवन में एक बड़ा **Truning Point** आया। सन् २०२१ में कई दिनों तक पेट दर्द की समस्या रही। मेडिकल चेकअप के बाद एक अप्रत्याशित अनसोची रिपोर्ट सामने आई कि समणी पावनप्रज्ञा जी को पेट में कैंसर है। बहुत चिंतन के बाद जब उनको इसके बारे में बताया गया, वो इतनी शांत, सहज और सकारात्मक थी कि मानो कैंसर नहीं गैस की सामान्य बीमारी हो। जिस बीमारी के नाम से रोगी प्रकंपित हो जाता है, वहीं इस विषय में संसारपक्षीय अनुजा बहन साध्वीश्री सहजप्रभाजी का भी आत्मीय व अनुपम चिंतन सहयोगी बना।

समणी पावनप्रज्ञा स्थिरता के साथ अपनी योजना

बनाने लगी कि इस रोग का सामना कैसे किया जाए? कीमो आदि को अस्वीकारते हुए रोग आगे न बढ़े इस दृष्टि से वलसाड में आयुर्वेदिक चिकित्सा का मानस बनाया। उससे भी बड़ा आध्यात्मिक चिकित्सा का संकल्प लिया। यद्यपि पेट का पानी निकलवाने समय-समय पर हॉस्पिटल जाना पड़ता, किंतु पूज्यप्रवर आचार्य महाश्रमण जी द्वारा प्रदत्त मंत्र उनकी सबसे बड़ी दवा थे।

हम सौभाग्यशाली हैं कि तेरापंथ धर्मसंघ विरासत में मिला और करुणानिधान आचार्यश्री महाश्रमण जी जैसे गुरु का साया और सन्निधि तन, मन और आत्मा में बल भरते हैं। आचार्यप्रवर को ज्ञात होते ही निर्देश दिया कि जहाँ कहीं अपेक्षा लगे उनकी चिकित्सा करवाई जा सकती है।

इस असाध्य बीमारी ने उनकी पूरी दिनचर्या को बदल दिया। चिंतनधारा ने नया रूप ले लिया। प्रवर्धमान की गुरु-भक्ति ने गुरुमुखी बना दिया। गुरु-शरण ही हर समस्या का समाधान था। सर्वात्मना समर्पण का पुरस्कार था अनहद गुरु-कृपा। पूज्यप्रवर ने भीलवाड़ा चातुर्मास में हमें साथ में रखवाने का अनुग्रह करवाया। प्रायः प्रातः भ्रमण के समय गुरुदेव पावनप्रज्ञा जी को मंगलपाठ श्रवण करवाते। गुरुदेव का ओजस्वी मंगलपाठ उनके लिए दर्द-निवारक दवा का कार्य करता। एक दिन पावनप्रज्ञा जी ने गुरुदेव के समक्ष अपने दो मनोरथ निवेदित किए-(१) श्रेणी आरोहण (साध्वी दीक्षा), (२) संथारा। उनकी प्रबल भावना का अंकन करते हुए गुरुदेव ने उन्हें साधु प्रतिक्रमण सीखने का आदेश फरमाया। शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी ने भी अनेक बार सेवा के दौरान वार्ता की। मुख्यनियोजिका जी (वर्तमान साध्वीप्रमुखाश्रीजी) तथा साध्वीवर्या जी हमारे प्रवास स्थल पर पधारकर दर्शन देते, आध्यात्मिक संगान कराते। लगभग यह क्रम छपर (२०२२), सूरत (२०२३) में भी रहा।

मुंबई चातुर्मास में पूज्य गुरुदेव की अनुकंपा और आशीर्वाद को शब्दों में अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता। गुरुदेव द्वारा प्रदत्त 'लोगस्स' की माला तथा साध्वीप्रमुखाश्री जी द्वारा प्रदत्त 'संती कुंधु अर्हम्--' तथा 'चइता भारहं वासं--' की प्रतिदिन तन्मयता से माला फेरती। रोग के साथ संघर्ष का तीसरा वर्ष चल रहा था। रोग शिखर की ओर गतिमान था। उन्होंने शरीर की अशक्यता व स्थिति को देखते हुए पानी निकलवाने से इन्कार कर दिया और केवल अध्यात्म साधना व गुरु को ही अपना आलंब बनाया। शरण वात्सल्य-सिंधु पूज्यप्रवर एक दिन के अंतराल से दर्शन देने पधारते, आजीवन एक खाद्य-वस्तु का त्याग करवाते। गीत का संगान करवाते।

श्रद्धेया साध्वीप्रमुखाश्री जी व साध्वीवर्याजी प्रायः दर्शन देने हुए प्रतिदिन पधारते तथा कई बार विराजकर सेवा भी करवाते। पावनप्रज्ञा जी इनके उपकारों को हमेशा स्मृति में रखती। गुरुदेव के इंगितानुसार साध्वीवर्याजी ने आलोचना भी करवाई। समादरणीय मुख्यमुनिप्रवर आचार्यप्रवर के इंगितानुसार सेवा करवाते तथा पावनप्रज्ञा जी के मनोरथ को बल देते हुए चारित्र शीघ्र उपलब्ध हो ऐसी प्रेरणा देते।

आहार की मात्रा अल्प होते देख संलेखना के विचार से पर्युषण से एकांतर तप प्रारंभ किया और

एक बेला भी। समय-समय पर अपनी भावना, कृतज्ञता गुरुदेव को निवेदित करते ही गुरुदेव का मंगलपाठ सुनते ही वेदना कम हो जाती है। ५ अक्टूबर को उन्होंने पूज्यप्रवर के समक्ष अपने दोनों मनोरथ पूर्ण करने की प्रार्थना की। कृपा-सिंधु की महर बरसी, पंचांग में स्वयं शुभ समय देख उसी दिन ११ बजकर २१ मिनट पर समणी पावनप्रज्ञा जी के श्रेणी आरोहण का फरमान करवाया। तीर्थंकर समवसरण, नंदनवन (मुंबई) में आचार्य महाश्रमण जी ने समणी पावनप्रज्ञा जी को बेले के तप में चारित्र में प्रस्थित कर साध्वी पावनप्रज्ञा बना दिया।

प्रथम मनोरथ की संपूर्ति की प्रसन्नता के पश्चात् उन्होंने दूसरे मनोरथ की प्रार्थना की। गुरुदेव के निर्देशानुसार साध्वीप्रमुखाश्री जी के संरक्षण में अनुकंपा भवन में उनकी संयम यात्रा प्रारंभ हो गई। उनकी सेवा में मुख्य रूप से साध्वी जयविभा जी व वैराग्यप्रभा जी को नियुक्त किया गया। साध्वी वीरप्रभा जी ने अपनी स्वेच्छा से साध्वी पावनप्रज्ञा जी की पूर्ण मनोयोग से अंतिम समय तक सेवा की। संयम के साथ तप-यात्रा भी आगे बढ़ती गई। करुणा सागर पूज्यप्रवर पधारते, वे अपनी भावना तथा सबके प्रति अहोभाव अभिव्यक्त करते। साध्वीप्रमुखाश्री जी दिन में ३-४ बार पधारकर सेवा करवाते, पारणे का फरमाते, पर साध्वी पावनप्रज्ञा जी का पक्का संकल्प था, अब इस जीवन में कुछ नहीं खाना है। अनंत जन्मों तक खाया है।

११ अक्टूबर को पुनः उन्होंने संथारे के लिए निवेदन किया। गुरुदेव ने अनेक प्रकारों से मन इच्छित वस्तु से पारणा करने की बात कही उनकी कसौटी की-संथारा यदि लंबा चला तो। पावनप्रज्ञा जी का एक ही जवाब 'जो होगा देखा जाएगा', अब पीछे नहीं मुड़ना है। मैंने सारे कार्य चिंतन और योजनापूर्वक किए हैं। मेरा मन पक्का है। कसौटी में खरे उतरे पावनप्रज्ञा जी पर गुरु की महर बरसी और ८ की तपस्या में तिविहार संथारे का प्रत्याख्यान करवाया।

दूसरे मनोरथ की संपन्नता से उत्पन्न आनंद पावनप्रज्ञा जी के चेहरे पर झलक रहा था। तत्पश्चात् प्रतिदिन पूज्यप्रवर पधारकर भक्तामर के पद्यों का संगान करवाकर उच्च परिणामों का आशीर्वाद प्रदान करवाते। मुख्यमुनिप्रवर भी शुभकामना के साथ परिणाम शुद्धि की मंगलकामना करते। प्रमुखाश्री जी दिन में कई

बार उन्हें सेवा करवाते-'हम आत्मा का ही ध्यान धरें, आत्मा भिन्न, शरीर भिन्न-की मानो अनुप्रेक्षा करवाते। साध्वीवर्याजी पधारकर गीत सुनाते, साता पुछाते। बहुश्रुत परिषद के सदस्य मुनिश्री दिनेश कुमार जी स्वामी आदि संत भी पधारकर गीतों का संगान करते। अन्य साध्वियों व समणियों भी निरंतर जप तथा गीतों का संगान कर संथारे की अनुमोदना करती।

साध्वी पावनप्रज्ञा जी से १४ अक्टूबर को पूज्यप्रवर ने खमतखामना किया तथा सभी संतों को भी खमतखामना करने का फरमाया। दिनांक १४ के दोपहर तक वह पूर्ण जागरूक अवस्था में थी। उनकी कायगुप्ति, समता, सकारात्मकता अत्यंत प्रेरणास्पद व श्लाघनीय थी। उनकी शांत चित्तता, स्थिरता देखकर कोई अनुमान नहीं लगा सकता कि वे असाध्य बीमारी की तीव्र वेदना से संघर्ष कर रही हैं। प्यास का परीषह था किंतु जी घबराता इसलिए पानी नहीं पी पाती। शरीर में जलन होती, फिर भी मुख से एक बार भी 'उफ' शब्द तक नहीं किया और न शरीर की हलन-चलन। १४ तारीख की दोपहर के पश्चात् न निद्रा, न तंद्रा, न मूर्च्छा भीतर से सचेत किंतु बाहर से निश्चेष्ट। सायंकालीन पाक्षिक प्रतिक्रमण के पश्चात् साध्वीप्रमुखाश्री जी, साध्वीवर्याजी आदि से हाथ जोड़कर खमतखामना किया। मध्यरात्रि में अल्प हलचल, तीव्र वेदना अभिव्यक्त कर रही थी। ब्रह्मबेला के पश्चात् पूर्णतया निश्चछ, श्वासगति-कभी तीव्र, कभी मंद। साध्वीप्रमुखाश्रीजी, साध्वीवर्याजी आदि साध्वियों ने प्रतिक्रमण सुनाया। १५ अक्टूबर सूर्योदय के पश्चात् शीघ्र ही परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर का अनुकंपा भवन में पदार्पण हुआ। वे आँखें खोल दर्शन न कर सकी। वह निश्चल अवस्था काफी समय तक बनी रही। जीवन के अंतिम क्षण तक बीमारी से वे नहीं हारे अपितु गुरुकृपा से उन्होंने बीमारी को हरा दिया। फिर लगभग सवा बजे दोपहर में साध्वी पावनप्रज्ञा ने समाधि मरण को प्राप्त कर देवलोक की ओर प्रस्थान कर लिया।

केवल ११ दिन के चारित्र पर्याय में अपनी समता, शांत चित्तता, सतत कृतज्ञ भाव के द्वारा सबके मानस में अमिट स्थान बना लिया। धन्य हुई साध्वी पावनप्रज्ञा जी जिन्होंने अनहद गुरु-कृपा को प्राप्त किया और गुरुचरणों में ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया।

रक्तदान अमृत स्मरणोत्सव का आयोजन

मंडिया।

अभातेयुप द्वारा अमृत स्मरणोत्सव-२०२३ के तहत तेरापंथी सभा भवन, मंडिया में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का शुभारंभ मूर्तिपूजक संघ की साध्वीश्री द्वारा नवकार मंत्र व मंगलपाठ से हुआ। उद्घाटन मुख्य प्रायोजक कर्नाटका बैंक मंडिया ब्रांच के मैनेजर राधवेन्द्र ने किया। शिविर में सभा के अध्यक्ष नरेंद्र दक ने कहा कि तेयुप ने रक्त संग्रह करने का जो लक्ष्य लिया है वे गुरुदेव की कृपा से वह लक्ष्य अवश्य हासिल होगा। महिला मंडल अध्यक्ष पूनम बोहरा ने अपने विचा व्यक्त किए। तेयुप अध्यक्ष प्रवीण दक ने सभी अतिथियों का स्वागत किया।

शिविर में मंडिया क्षेत्र के विधायक पी० रविकुमार गौड़ा, मंडिया पुलिस अधीक्षक यतीश एन एवं बि०आर० रामचंद्रा ने शिविर का अवलोकन करते हुए रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन किया। क्षेत्रीय विधायक रवि कुमार ने तेयुप को बधाई दी। शिविर में ३०२ यूनिट रक्त एकत्रित हुआ। शिविर के समापन के बाद ब्लड बैंक के प्रबंधक रफीक द्वारा तेयुप को रक्त संग्रह का प्रमाण-पत्र दिया गया। सभी का आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री कमलेश गोखरू ने किया।



श्री महिला मंडल के आयोजन श्री

राइजिंग हाई टच द स्काई कार्यशाला

नंदनवन, मुंबई।

तेमम के तत्वावधान में मुंबई कन्या मंडल द्वारा आयोजित नंदनवन परिसर में आचार्यश्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में और साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी की प्रेरणा से चातुर्मास में मुंबई कन्या मंडल के लिए चल रही कार्यशाला 'राइजिंग हाई टच द स्काई' सीरीज के 6 सत्र हो चुके हैं। तीर्थंकर समवसरण में प्रवचन के समय कन्या मंडल की प्रस्तुति रही। जिसमें कन्याओं ने अब तक हुए सत्र में जैनिज्म के बारे में उन्होंने क्या-क्या सीखा और उनके जीवन में कितना परिवर्तन हुआ, यह बताया। इन सभी मोटिवेटिंग और इनफॉर्मेटिव कार्यशाला में साध्वी दीप्तिशशा जी, साध्वी वदनाश्री जी, साध्वी सिद्धार्थप्रभा जी, साध्वी डॉ० ऋद्धिप्रभा जी, साध्वी प्रबुद्धयशा जी का पावन पाथेय रहा।

कन्या मंडल से वृत्तिका डूंगरवाल और किंजल चोरड़िया ने अपनी प्रस्तुति दी। किंजल चोरड़िया ने एक स्लैम बुक बनाई जिसमें सभी सेशन की शॉर्ट समरी दी। जो कन्या मंडल ने पूज्यप्रवर को भेंट की।

कार्यक्रम में अभातेमम की ट्रस्टी प्रकाश बाई तातेड़, मुंबई महिला मंडल अध्यक्षा विमला कोठारी, कन्या मंडल प्रभारी मधु बाफना, सह-प्रभारी पूनम परमार, कन्या मंडल सह-संयोजिका नेहा सोलंकी, निकता चौहान आदि की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन कन्या मंडल संयोजिका काजल मादरेचा ने किया।

कार्यक्रम के पश्चात भगवती संवत्सरी महापर्व के अवसर पर मुंबई कन्या मंडलने परम पूज्य गुरुदेव से, मुख्य मुनि महावीर कुमार जी, साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी, साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी व सभी चारित्रात्माओं से क्षमायाचना की। मुंबई कन्या मंडल की सराहनीय उपस्थिति रही।

द पावर ऑफ सब-कॉन्सियस माइंड कार्यशाला का आयोजन सरदारपुरा।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेमम, सरदारपुरा, जोधपुर द्वारा 'द पावर ऑफ सब-कॉन्सियस माइंड' कार्यशाला का आयोजन मेघराज तातेड़ भवन में साध्वी कुंदनप्रभा जी के सान्निध्य में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री जी ने नमस्कार महामंत्र से की। महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण गीतिका का संगान किया गया। मंत्री चेतना घोड़ावत ने स्वागत वक्तव्य के द्वारा सबका अभिनंदन किया।

साध्वी विद्युतप्रभा जी ने एक घटना के माध्यम से अपने मन को कैसे एकाग्र करें इसके बारे में बताया। साध्वी चारित्रप्रभा

जी ने 'द पावर ऑफ सब-कॉन्सियस माइंड' पर प्रकाश डालते हुए एक ओजस्वी व्यक्तत्व के द्वारा हमारे अवचेतन मन के बारे में बताया। कैसे हम अपनी चेतना को जागृत कर सकते हैं। जीवन में सकारात्मकता के महत्त्व के बारे में जानकारी दी।

अध्यक्ष दिलखुश तातेड़ ने अवचेतन मन को जागृत करने के अलग-अलग प्रयोग के बारे में बताया। साध्वी विद्युतप्रभा जी और साध्वी चरित्रप्रभा जी दोनों ने एक रोचक प्रतियोगिता कराई, जिसमें मन को कैसे नियंत्रित किया जाए, के बारे में जानकारी दी। आभार ज्ञापन सविता तातेड़ ने किया। कार्यक्रम का संचालन अर्चना बुरड़ ने किया।

गुवाहाटी।

साध्वी स्वर्णरेखा जी के सान्निध्य में अभातेमम द्वारा निर्देशित 'द पावर ऑफ सब-कॉन्सियस माइंड' कार्यशाला का आयोजन तेमम द्वारा तेरापंथ भवन में किया गया। इस अवसर पर साध्वी स्वर्णरेखा जी ने कहा कि हमें अपनी सोच सकारात्मक रखनी चाहिए, हमारा मन कैसे जागृत हो सके, हमारे दिमाग को कैसे प्रबल बना सकें, इसका प्रयास करते रहना चाहिए। अणुव्रत प्रेरणा दिवस पर साध्वीश्री जी ने कहा कि आदमी की सोच से ही आदमी आगे बढ़ सकता है।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण का संगान किया गया। अध्यक्षा अमराव बोथरा ने अपने स्वागत वक्तव्य में सभी का स्वागत किया एवं कार्यशाला पर प्रकाश डाला। मुख्य वक्ता के रूप में महिला मंडल की सदस्या आस्था नाहटा ने अपने भाव व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन उपाध्यक्ष कुसुम कोटेचा ने किया। मंत्री ममता दुगड़ ने साध्वीश्री जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए सभी का आभार एवं धन्यवाद ज्ञापन किया।

द पावर ऑफ सब-कॉन्सियस माइंड एवं द पावर ऑफ रीडिंग कार्यशाला का आयोजन कांटाबांजी।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेमम, कांटाबांजी ने दो माह की कार्यशालाओं का आयोजन किया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से किया गया। महिला मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत का संगान किया। रितु जैन ने कार्यशाला के बारे में जानकारी दी तथा कैसे हमें अपने अवचेतन मन को सक्रिय रखना है और पॉजिटिव थिंकिंग रखना चाहिए, इसके बारे में अपने विचार व्यक्त किए।

तेमम अध्यक्षा आशा जैन ने द पावर

ऑफ रीडिंग के बारे में सभी को बताया कि हमारे जीवन में पढ़ाई की क्या उपयोगिता है। अन्य बहनों ने भी दोनों विषयों पर अपने विचार साझा किए। कार्यक्रम का संचालन तेमम सचिव रीतु जैन ने किया। सपना जैन ने आभार ज्ञापन किया।

अवचेतन मन का साक्षात्कार कर बनें शक्ति संपन्न

हैदराबाद।

तेरापंथ भवन में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में अभातेमम के द्वारा निर्देशित एवं तेमम, हैदराबाद द्वारा कार्यशाला आयोजित की गई। इस अवसर पर साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि मनुष्य इस सृष्टि की सर्वोत्तम रचना है। समृद्धि की दृष्टि से देव परिषद श्रेष्ठ है, पर उनकी भी बांछा मनुष्य बनने की हाती है। मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ मस्तिष्क के कारण माना गया है। चेतन, अवचेतन और अचेतन—ये तीन मस्तिष्क होते हैं। मात्र हम चेतन मस्तिष्क के स्तर पर जी रहे हैं। एक प्रश्न है व्यक्ति अपने अवचेतन मन से संपर्क कैसे कर सकता है? अवचेतन मन प्लेन धरती की तरह है। जैसा बीज बोएंगे, वैसा उत्पादन हो जाएगा। ध्यान दें अवचेतन मन को नकारात्मक सुझाव न दें। यदि परिवर्तन चाहते हैं तो सकारात्मक सुझाव दें, परिवर्तन होगा।

अच्छे विचार, सृजनशील और सौहार्दपूर्ण व्यवहार के बीज हैं। विकास के सोपान पर आरोहण करने के लिए आवश्यक है—अपना दृष्टिकोण व्यापक हो। विचारों की संकीर्णता आगे बढ़ने में अवरोध पैदा करती है। प्रबल संकल्प के साथ संगठन को मजबूत और उपयोगी बनाए रखने के लिए विशेष सूत्रों को आलंबन बनाएँ। अध्यात्म की धारा अवचेतन में प्रवाहित हो, शक्ति का जागरण होता रहे।

महिला मंडल की अध्यक्षा कविता आच्छा ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। तेमम की निवर्तमान अध्यक्षा एवं वर्तमान उपासिका अंजु बैद ने चेतन-अवचेतन और अचेतन मस्तिष्क के संदर्भ में कहा कि हम विनम्र व्यवहार और सकारात्मक सोच एवं दृढ़-संकल्प के द्वारा परिवार और समाज में आनंद के साथ जीएँ। शिल्पशाला में मंच संचालन मंत्री सुशीला मोदी ने किया। साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी द्वारा उपस्थित संभागियों को ध्यान का प्रयोग करवाया। आभार ज्ञापन तेमम सहमंत्री प्रेम संचेती ने किया।

इस अवसर पर राजेश सेठिया ने ग्यारह दिनों के तप का प्रत्याख्यान किया। साध्वीवृंद ने तप-अनुमोदन गीत प्रस्तुत किया। तेरापंथ सभा, महिला मंडल एवं तप से तप का सम्मान हो, इस परंपरा के निर्वहण में सुदीप नौलखा एवं राजेंद्र छाजेड़ ने तपस्वी का सम्मान किया।

आचार्य कालूगणी निर्वाण दिवस के आयोजन

सिकंदराबाद

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में तेरापंथ के अष्टमाचार्य कालूगणी की पुण्यतिथि मनाई गई। इस अवसर पर साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि मृदु कालूगणी ने तेरापंथ धर्मसंघ में विकास का बीजारोपण किया। वे तेरापंथ धर्मसंघ के ख्याति प्राप्त महासाहसी आचार्य के रूप में प्रतिष्ठित हुए हैं। इसका साक्षात् उदाहरण है—२२ वर्षीय मुनि तुलसी को संघ का दायित्व सौंप देना। वे पुण्यशाली प्रतापी आचार्य बने, जिन्होंने संघ को आचार्य तुलसी जैसे तेजस्वी आचार्य दिया।

साध्वीश्री जी ने कहा कि कालूगणी ने अपनी मेधा शक्ति से संघ को विकास के शिखर पर आरोहण करवाया। साध्वी समुदाय की शिक्षा के संदर्भ में उनका युगीन सम्यक् चिंतन संपूर्ण संघ के लिए प्रणम्य है। साध्वी सुदर्शनप्रभा जी एवं साध्वी राजुलप्रभा जी ने गीतिका के द्वारा प्रस्तुत किया। साध्वी सिद्धियशा जी ने कहा कि कालूगणी का अनुशासन लोकप्रिय था।

पूजा दक ने नौ की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। तेरापंथ सभा द्वारा तपस्विनी बहन का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने किया।

कानपुर

कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी संगीतश्री जी के महामंत्रोच्चार से हुआ। साध्वीश्री जी ने कहा कि वह बड़े प्रभावशाली और पुण्यवान आचार्य थे। उनका प्रभाव इतना तीव्र था कि विरोधीजन भी उनसे अभिभूत हुए बिना नहीं रह सकते थे। उनके युग में समाज की भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति हुई। सभा अध्यक्ष धनराज सुराणा ने आचार्य कालूगणी के जीवन से संबंधित अनेक रोचक घटनाओं का विवरण प्रस्तुत किया। सभा मंत्री संदीप जम्मड़ ने कहा कि तेरापंथ का क्षेत्र विस्तार और संस्कृत भाषा का विकास आचार्य कालूगणी द्वारा हुआ।

साध्वी शांतिप्रभा जी ने कहा कि आचार्य कालूगणी का सबसे बड़ा अवदान तेरापंथ धर्मसंघ में दो आचार्य—आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ के रूप में मिला है। साध्वी कमलविभा जी ने कहा कि आचार्य कालूगणी के समय में साधुओं के वस्त्र, पात्र, रजोहरण आदि उपकरणों में कला का विकास हुआ था। तेरापंथी सभा, महिला मंडल और तेयुप के संयुक्त प्रयास से आचार्य कालूगणी का निर्वाण दिवस साध्वीवृंद की प्रेरणा से मनाया गया।

विकास महोत्सव का आयोजन

कानपुर।

साध्वी संगीतश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में विकास महोत्सव मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री जी के महामंत्रोच्चार से हुआ। तत्पश्चात पूनमचंद सुराणा ने मंगलाचरण की प्रस्तुति दी। साध्वी संगीतश्री जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी विकास के पुरोधा थे। तेरापंथ धर्मसंघ को शिखर तक पहुँचाने के लिए अनेक आयाम दिए। आचार्यश्री तुलसी ने आचार्य पद का विसर्जन कर इतिहास में नया कीर्तिमान स्थापित किया। अहंकार, ममकार से ऊपर उठे हुए थे। आपके जीवन में विकास के लिए 99 के अंक महत्त्वपूर्ण रहे।

इसी क्रम में साध्वी शांतिप्रभा जी, साध्वी कमलविभा जी व साध्वी मुदिताश्री जी ने अपने आराध्य के विकास के आयाम की जानकारी दी। सभा अध्यक्ष धनराज सुराणा, महासभा के कार्यकारिणी सदस्य धनेश भूतोड़िया, महिला मंडल से रतनी पुगलिया ने अपने विचार, वक्तव्य और गीत के माध्यम से आचार्य तुलसी का स्मरण किया। कार्यक्रम का संचालन तेयुप अध्यक्ष दिलीप मालू ने किया। पटना और जलगाँव से भाई-बहन भी उपस्थित थे।

दो दिवसीय रिक्रेश कोर्स का आयोजन

कोलकाता।

दो दिवसीय रिक्रेश कोर्स का आयोजन मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में हुआ। कार्यक्रम में महासभा के अध्यक्ष मनसुख सेठिया, राष्ट्रीय संयोजक सोहनलाल चोपड़ा, राष्ट्रीय प्राध्यापक डालमचंद नौलखा, आंचलिक संयोजिका प्रेमलता चोरड़िया एवं दक्षिण कोलकाता के अध्यक्ष स्थानीय एवं अन्य सभा के अध्यक्ष-मंत्री एवं अनेक सभा के अध्यक्षों एवं पदाधिकारी अच्छी संख्या में

प्रशिक्षिका बहनें और वृहत कोलकाता एवं दक्षिण बंगाल की पूरी टीम आंचलिक संयोजिका के साथ कार्यक्रम में सहयोगी बनें। दक्षिण कोलकाता सभा के तत्वावधान में कार्यक्रम हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण से हुआ। मुनिश्री ने भी क्लास ली। राष्ट्रीय संयोजक ने ज्ञानशाला की विस्तृत जानकारी दी। डालमचंद नौलखा ने दान-दया लौकिक लोकोत्तर के संबंध में बहनों की जिज्ञासा का समाधान दिया।

ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव कार्यक्रम का आयोजन

सरदारपुरा, जोधपुर।

साध्वी कुंदनप्रभा जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला के वार्षिकोत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा महावीर वंदना के संगान से हुआ। स्वागत वक्तव्य बी०आर० जैन द्वारा दिया गया। ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा गीत की प्रस्तुति दी गई। मुख्य प्रशिक्षिका अर्चना बुरड़, कनिका बैद, मीनाक्षी छाजेड़, समता सालेचा, संगीता मेहता, संतोष मेहता, संगीता तातेड़, सविता तातेड़ आदि अनेकजनों के सहयोग से ज्ञानशाला के बच्चों ने नाट्य, संवाद, नृत्य आदि का लगभग 90 प्रस्तुतियाँ दी।

मुख्य प्रस्तुतियों में जैन धर्म के चौबीस तीर्थंकर के चिह्न को दर्शाते सुंदर प्रस्तुति दी। 'स्वार्थ की दुनिया' नाटिका से बताया किस प्रकार स्वार्थ के कारण मनुष्य स्वयं का नुकसान कर लेता है। वहीं एकता की

शक्ति विषय पर नाटिका से बताया कि किस प्रकार हमें संगठित रहना चाहिए। नाटिका द्वारा बच्चों ने पतन के रास्ते से बचने का आह्वान किया।

संतोष मेहता ने पावन पाइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से ज्ञानशाला की वर्ष पर्यन्त हुई गतिविधियों की संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की। अपने संचालनीय वक्तव्य में मुख्य प्रशिक्षिका अर्चना बुरड़ ने बताया कि सरदारपुरा ज्ञानशाला 9५ वर्षों से नियमित रूप से चल रही है। जिसमें 9२५ से अधिक ज्ञानार्थी नियमित ज्ञानार्जन व व्यक्तित्व का विकास कर रहे हैं।

कार्यक्रम में ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों द्वारा केंद्रीय संस्था तेरापंथी महासभा के द्वारा आयोजित होने वाली शिशु संस्कार बोध की कक्षा 9 से ५ की परीक्षा में प्रथम तीन स्थान व वर्ष पर्यन्त आयोजित होने वाली प्रतियोगिताओं में विजेता बच्चों को सभा

द्वारा पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि घनश्याम ओझा ने बच्चों के विकास को देखकर ज्ञानशाला को सराहा और संयोजक व प्रशिक्षिकाओं को बधाई दी।

साध्वी कुंदनप्रभा जी ने कहा कि बच्चों में संस्कृति की सौरभ महकती रहे और संस्कारों का पालन का बीज शुरू से ही रोपित करना जरूरी है। ज्ञानशाला संस्कारों के अर्जन का सुंदर माध्यम है।

कार्यक्रम में महासभा उपाध्यक्ष विजयराज मेहता, युवा गौरव मर्यादा कुमार कोठारी, सभा अध्यक्ष सुरेश जीरावला, मंत्री महावीर चोपड़ा, तेयुप सरदारपुरा अध्यक्ष कैलाश जैन, मंत्री मिलन बाँटिया, महिला मंडल अध्यक्ष दिलखुश तातेड़, मंत्री चेतना घोड़ावत, टीपीएफ अध्यक्ष नरेश सिंधी सहित अनेक गणमान्य जन उपस्थित रहे।

ज्ञानवृद्धिकारक अनुष्ठान का आयोजन

सिकंदराबाद।

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में तेयुप के तत्वावधान में ज्ञानवृद्धिकारक अनुष्ठान का आयोजन हुआ। इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि जब अन्तेवासी शिष्य गौतम ने प्रभु महावीर से जिज्ञासा की-प्रभो! स्वाध्याय से जीव क्या प्राप्त करता है? महावीर ने जिज्ञासा को समाहित करते हुए कहा कि स्वाध्याय से ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय होता है। आगम साहित्य में स्वाध्याय के पाँच प्रकार बताए गए हैं। ज्ञान विकास, बुद्धि विकास और स्मृति विकास का संबंध ज्ञानावरणीय कर्म के साथ है।

साध्वीश्री जी द्वारा विविध प्रभावशाली श्रुत मंत्रों के साथ अनुष्ठानकर्ताओं को साधना करवाई गई। साध्वीश्री जी ने कहा कि अध्ययन के लिए पूर्व या उत्तर दिशा अभिमुख बैठना चाहिए। ईशान दिशा भी अध्ययन के लिए उत्तम मानी जाती है। ज्ञान प्राप्ति के लिए प्रबल संकल्प का विशेष महत्त्व होता है। संकल्प शक्ति के साथ एकाग्रता भी अत्यावश्यक है। महाप्राण ध्वनि की साधना से मस्तिष्क की कोशिकाएँ सक्रिय होती हैं, जिससे ज्ञान ग्रहण शीघ्रता से हो पाता है।

उपस्थित परिषद के प्रथम बार हुए अनुष्ठान के लिए साध्वीश्री जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। तेयुप के अध्यक्ष एवं सभी सदस्यों ने एकनिष्ठ होकर इस अनुष्ठान को सफलता प्रदान करने में श्रम समय का नियोजन किया। किशोर मंडल का सराहनीय श्रम रहा। तेयुप के अध्यक्ष निर्मल दुगड़ ने संपूर्ण परिषद का स्वागत किया।

साध्वी सुदर्शनप्रभा जी ने विचार व्यक्त किए। साध्वीवृंद ने गीत का सामूहिक संगान किया। साध्वी डॉ० चैतन्यप्रभा जी ने कार्यक्रम का संचालन किया। साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने संपूर्ण श्रावक समाज को जप, तप, स्वाध्याय आदि के द्वारा पर्युषण पर्व मनाने की विशेष प्रेरणा दी।



अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम	अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
* श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर		5,00,000
* श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना		5,00,000
* श्री राकेश कठोटिया, लाडनू-मुंबई		5,00,000
* श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई		5,00,000
* श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा		5,00,000
* श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत		5,00,000
* श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई		5,00,000
* श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई		5,00,000
* श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा		5,00,000
* श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा		5,00,000
* श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छपर-सिलीगुड़ी		5,00,000
* श्री बसंत नवलखा, बीकानेर		5,00,000
* श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर		5,00,000
* श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत		5,00,000
* श्री छत्तरमल गणेशमल विनीतकुमार बैद, राजलदेसर-चेन्नई		5,00,000

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

सूरत।

सेमड़ निवासी, सूरत प्रवासी मोहनलाल जैन के सुपुत्र मनीष जैन के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड़, सुशील गुलगुलिया ने संपूर्ण विधि व मंत्रोच्चार से संपादित करवाया। तेयुप की ओर से मंगलभावना पत्रक व मंगलकामना पत्र भेंट किया।

नामकरण संस्कार

सूरत।

गंगाशहर निवासी, सूरत प्रवासी संपतलाल सांड के सुपुत्र आकाश-पूजा सांड के प्रांगण में कन्या का जन्म हुआ। जिसका नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक प्रकाश डाकलिया, धर्मचंद सामसुखा, नरेंद्र भंसाली ने संपूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से संपादित करवाया।

तेयुप, सूरत की ओर से नामकरण पत्रक व मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट-२०२३ जिला स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन

भीलवाड़ा।

नई पीढ़ी में रचनात्मकता और सकारात्मकता को प्रोत्साहित करने का राष्ट्रव्यापी अभियान है-अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी का अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट-२०२३, अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के निर्देशन में अणुव्रत समिति, भीलवाड़ा द्वारा अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट-२०२३ का जिला स्तरीय प्रतियोगिता महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल, शास्त्रीनगर में आयोजित की गई। प्रतियोगिता का शुभारंभ अणुव्रत समिति सदस्यों द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट की संयोजिका आनंद बाला टोडरवाल ने बताया कि भीलवाड़ा जिले के २० विद्यालयों से 9३५ बच्चों ने लेखन, चित्रकला, भाषण, कविता और गीत गायन प्रतियोगिता में भाग लिया। इसी पूर्व अणुव्रत समिति, भीलवाड़ा द्वारा अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट का विद्यालय स्तर पर आयोजन किया गया था, जिसमें 9५ विद्यालयों के 9००० बच्चों ने प्रतियोगिता में भाग लिया।

अणुविभा उपाध्यक्ष निर्मल गोखरू एवं

अणुव्रत महासमिति के पूर्व महामंत्री संपत शामसुखा ने अपने विचार व्यक्त किए। बच्चों को विद्यार्थी अणुव्रत का संकल्प दिलाया गया सभी निर्णायकगण जिसमें चित्रकला के निर्णायक अर्पिता गुप्ता, रिया लोढ़ा, गीत गायन के निर्णायक संजय भानावत, गुणमाला बोहरा, लेखन की निर्णायक गरिमा कोठारी, स्वाति पाराशर, कविता लेखन का निर्णायक जयप्रकाश भाटिया, स्मिता जैन एवं भाषण के निर्णायक करण सिंह सिंधवी, आभा मित्तल एवं पालय बोलिया का सम्मान किया गया।

बच्चों को प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान के कैलेंडर बाँटे गए। संचालन मंत्री रेणु चोरड़िया ने किया। आभार अध्यक्ष अभिषेक कोठारी ने किया। कार्यक्रम में महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल के डायरेक्टर मदनलाल टोडरवाल, अणुव्रत समिति उपाध्यक्ष विमला रांका, राजेश चोरड़िया, सहमंत्री संजय चौधरी, रीना बाफना सहित अनेक सदस्यों एवं गणमान्यजनों की उपस्थिति रही।

तपस्या अभिनंदन समारोह

बीदासर।

केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी रचनाश्री जी के सान्निध्य में ६ वर्षीय बालिका राशि बैद के अटाई की तपस्या का अभिनंदन समारोह मनाया गया। साध्वीश्री जी ने कहा कि तपस्या कर्म रजो को होता है जैसे ही जैसे रजाई बनाने से पूर्व रुई को धुना जाता है और उजला किया जाता है जैसे ही तप करने वाला व्यक्ति तपस्या से कर्म रजो को धुनता है और आत्मा को उजला करता है। तप रूपी साबुन भीतर के मैल को धो देता है। जिससे आत्मा उज्ज्वल होती है।

साध्वीवृंद ने गीत, कविता का संगान किया। शिखा बैद, सेखानी स्कूल के प्रिंसिपल धनराज, दिव्या बोथरा, भावना दुगड़, अलका बाँटिया, पारस-रजनी बैद, रूपेश सेखानी ने विचार व्यक्त किए। महिला मंडल, कन्या मंडल, पारिवारिक बहनों ने गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन साध्वी लब्धियशा जी ने किया।



साध्वी पावनप्रज्ञा जी के प्रति काव्यात्मक उद्गार

किया है जीवन का उद्धार

● साध्वी लावण्यश्री ●

पावन पादाम्बुज में पावनप्रज्ञा पावन बन गई,
करुणा सागर की करुणा से असली कंचन बन गई।।

वंदन नंदनवन में विराजित नेमा माँ के नंदन को,
धन्य धन्य है संघ-शासना, कोटि नमन गुरु आसन को,
कर्णधार की अनुकम्पा से, अनमोल रतन जो बन गई।।

अक्षयप्रज्ञाजी ने माँ बनकर बेटी (बहन) की सेवा की,
प्रणव बन गई बेटी मानो माँ की तन मन से सेवा की,
तीजा मनरथ पूर्ण किया अब पावन सावन बन गई।।

जीवन नैया के खैवैया तारणहारे गुरु मिले,
निश्चिंत बनाते हम सबको हर दिल में श्रद्धा दीप जले,
गणमाली की कुशल शरण पा पावन मधुवन बन गई।।

इस नश्वर औदारिक तन रही वेदना अपरंपार,
फौलादी संकल्प आपका किया है जीवन का उद्धार,
नवमप्रमुखा वर्याजी सन्निधि में एवन बन गई,
लावण्यभरी गुरुवाणी सुन पावन मनभावन बन गई।।

अनशन सुखकारी

● साध्वी काम्यप्रभा ●

स्वामी भीखणजी रो शासन महाउपगारी,
गुरुवर महाश्रमण चरणां री ज्यावां बलिहारी,
पूज्यश्री मुख स्युं पचखायो,
साध्वी पावनप्रज्ञाजी ने अनशन सुखकारी।।

बरसावै प्रभु अनहद करुणा, वरणन करणो मुश्किल वरणां।
नव नव कीर्तिमान रचावै विभुवर कीरतधारी।।

करवायो श्रेणी आरोहण, करमां रो होवै अवरोहण।
प्रभुवर सूपी तेरा क्रोड राशि रतनां री।।

तीजो मनरथ पूर्ण करायो, मन मधुवन अतिशय सरसायो।
भाग्यविधाता त्राता गुरु अनुकंपा अवतारी।।

मनबल आगे तनबल फीको, समता निर्झर एक सरीखो।
चढ़तां भावों में स्वीकार्यो अनशन मंगलकारी।।

जनमां री पुनवानी जागी, तन री मन री ममता त्यागी।
मुक्ति महल ने पावन जोड़ी आतम इकतारी।।

उर्वर भूमि है मालाणी, संधारे में है अगवाणी।
स्वर्णाक्षर में अंकित हुसी, अनशन इचरजकारी।।

दीपै महातपसी बरतारो, मावस में भी है उजियारो।
उजलो जीवन दर्पण लागै सबनै मनहारी।।

लय : स्वामी भीखणजी रो नाम आढूं याम----

स्वीकार्यो संधारा

● साध्वी वैराग्यप्रभा, साध्वी समत्वप्रभा ●

पावनप्रज्ञा जी स्वीकार्यो संधारा।
चढ़ते परिणामां स्युं पावो भवसागर रो पार।।

मुंबई महानगरी नंदनवन महाश्रमण दरबार।
वंदन मुद्रा बोल्या गुरुवर! नाव लगाद्यो पार।।

आत्मा में थे लीन बण्या हो कण्टां में समभाव।
हाथां में है नवकरवाली मुगति री मन चाव।।

आत्मा न्यारी काया न्यारी ओ है मंत्र अमोद्य।
तार जुड्यो है आत्मा स्युं बस मूल्या रोग अरु शोक।।

राह उजाली जीवन री थे काट्यो तन रो सार।
ममता भारी समता धारी खुलसी मुगति द्वार।।

अक्षयप्रज्ञा भगिनी थारी घणो दिरायो साज।
साता पहुँचावे गीत सुणावे भाणेजी मधुर आवाज।।

लय : सुख दुख रा साथी----

संधारे की नव सौरभ महकाई है

● साध्वी योगक्षेमप्रभा ●

अनुकंपा में संधारे की नव सौरभ महकाई है।
सतिशेखरे की सन्निधि पा, भाग्यलता लहराई है।।

महाकृपालु महाश्रमण गुरु ऊर्जा के अक्षय भंडार।
ममतामयी साध्वीप्रमुखाश्री बरसाते करुणा रसधार।
मुख्यमुनि की फली भावना मंगल घड़ियाँ आई हैं।
साध्वीवर्या ने कर अनुमोदन राह दिखाई है।।

चिन्मय से जब प्रीत जुड़े तब संधारा हो जाता है।
भृणमय से जब मोह टूटे तब अनशन अवसर आता है।
आत्मा भिन्न शरीर भिन्न की तुमने अलख जगाई है।।

कर अभेदभाव से सेवा अक्षय प्रणव उन्नत बनी।
सहयोगी अब वर्ग मुदित का सेवा की नव ख्यात बणी।
जयविभा वैराग्य वीर पा चित्त समाधि पाई है।।

कड़ी कसौटी कर प्रभुवर ने अनशन का उपहार दिया।
जुद्धारियं दुल्लहं को निज वृद्धता से साकार किया।
सार निकालो नश्वर तन का नाव किनारे आई है।।

लय : कलयुग बैठा----

साहस ध्वज फहरायो

● साध्वी मधुस्मिता ●

साहस ध्वज फहरायो
पावनप्रज्ञाजी अनशन कर जीवन धन्य बनायो।
मुंबई नगरी नंदनवन में नव इतिहास रचायो।।

महातपस्वी महाश्रमण गुरुवर री पा रिझवारी।
फल्या मनोरथ दोनूं बांरा घटना विस्मयकारी।
समता सरवर में नहाकर कल्याण मार्ग अपनायो।।

है संयोग वियोग युक्त अनुभूत हुई सच्चाई।
नहीं कोई म्हारो में नहीं किणरी बात समझ में आई।
करणो है ऊर्ध्वारोहण अब शुभ संकल्प सजायो।।

धन परिजन री ममता छोड़ी आत्मा स्युं लय जोड़ी।
छब्बीस बरस समण श्रेणी में रह वृत्यां नै मोड़ी।
चौथी सुख शय्या में सोकर वर आदर्श दिखायो।।

परम कृपालु कृपा सिंधु संपोषण सदा दिराता।
दर्शन देकर कर उपासना करवाकर भाव चढ़ाया।
आत्मा भिन्न शरीर भिन्न ओ अनुभव हुयो सवायो।।

समयज्ञा साध्वीप्रमुखाश्री स्नेह सुधा बरसाता।
साध्वीवर्या आदि सतियाँ समुचित साझ दिराता।
बहिन भाणजी आदि श्रमणीगण साता पहुँचाता।
वीरांगणा बन विजय वरी वै अनुपम अवसर आयो।।

लय : संयममय जीवन हो---

जागी जन्मों की पुण्याई

● साध्वी श्रुति प्रभा ●

जागी जन्मों की पुण्याई, पाया भैक्षवगण नंदनवन।
गुरु महाश्रमण के चरणों में ही आत्मा बन जाए पावन।।

देखो आई छोटी सतियाँ जिनकी तुम सदा हो उपकारी।
अनगिन उपकारों से उपकृत हम सारे ही हैं आभारी।
लालन-पालन कर बड़ा किया महकाया है जीवन उपवन।।

अक्षयप्रज्ञाजी की सन्निधि में, पाया तुमसे अपनापन।
दादी माँ जैसे हम बच्चों का लाड़लड़ाती थी हरदम।
पल जो बीते पास तेरे, वे याद रहेंगे आजीवन।।

क्या पाया तुमसे संस्था में, किन शब्दों में अभिव्यक्त करें।
साधना सिद्धि, वैराग्य वृद्धि अरु चंचलता को अल्प करें।
छोटे-छोटे मंत्रों से करती, संस्कारों का अभिसिंचन।।

इस तीव्र वेदना में कैसे बन पाई तुम समताधारी?
अत्यंत मनोबल, जागरूकता और धृतिबल भी भारी।
गुरु की वत्सलता, कृपादृष्टि से जीवन बन गया।

साध्वी पावनप्रज्ञा जी के प्रति काव्यात्मक उद्गार

इस धर्मसंघ का क्या कहना

● साध्वी सहजप्रभा ●

अनशन की महिमा भारी है, सति पावनप्रज्ञा का क्या कहना?
गुरु महाश्रमण उपकारी है, सति पावनप्रज्ञा का क्या कहना?

जयवंता भैक्षव शासन, शीतधर सम मनभावन-२
गूँजे चिहूँ दिशि महाश्रमण इस धर्मसंघ का क्या कहना।

काया की ममता छोड़ी है, अनशन की चादर ओढ़ी है-२
आत्मा से प्रीत जोड़ी है, सति पावनप्रज्ञा का क्या कहना।

संकल्प संजोए जो तुमने, तेरे सपने बन गए अपने-२
समता की शोभन मूरत हो, सति पावनप्रज्ञा का क्या कहना।

शुभभावों में (नित) रमण करो, शिवरमणी त्वरित वरण करो।
गुरु चरण शरण भवसिंधु तरो, सति पावन प्रज्ञा का क्या----

गुरुवर ऊर्जा का संप्रेषण, महासतिवर से मिले संपोषण-२
(यह) धन्य बना मुंबई नंदनवन, सति पावनप्रज्ञा का क्या कहना।

संयमश्रीजी का फरमाना आराधक पद को वरना।
प्रेम सहज, प्रसिद्ध का है कहना, आराधक पद वरना बहिना।
अंतःकरण से क्षमायाचना करते हैं हम सरलमना-२

लय : दुनिया में देव---

मुस्कान बड़ी प्यारी

● साध्वी मंजुलयशा ●

साध्वी पावनप्रज्ञाजी, देते शुभकामना।
तुम बड़ी वीर पथ पर हम, सबकी यह भावना।।

जीवन के तीन मनोरथ, को पूरा तुमने किया।
संधारा, दीक्षा महोत्सव, महाश्रमण की शासना।

बड़े भाग्य से ही मिलता है, सान्निध्य गुरुवर का।
पुण्याई प्रबल तुम्हारी, भवों भव की साधना।।

हो सरल सहज मनभावन, मुस्कान बड़ी प्यारी।
समता से सहन किया है, रोगों का सामना।।

अक्षय प्रणवप्रज्ञाजी, ने सेवा की भारी।
समता से बढ़ने आगे, शिव पथ आराधना।।

मधुबालाजी सह सतियाँ, तेरे संधारे पर।
सौ-सौ देते हैं बधाई, मंगल शुभ कामना।।

लय : प्रभु पार्श्व देव चरणों में---

सौ-सौ बार बधाई

● साध्वी कंचनप्रभा ●

धन्य हुए पावन प्रज्ञाजी! अद्भुत हिम्मत पाई।
सौ-सौ बार बधाई।।

समणी दीक्षा से मुनि दीक्षा, अनशन शीघ्र तुम्हारा।
तीव्र वेदना में भी समता, दीप रहा संधारा।
महाश्रमण गुरुवर आशीर्वर, भैक्षवगण पुण्याई।।

अक्षयप्रज्ञा प्रणवप्रज्ञा की सेवा देखी हमने।
यह भी गुरुवर की अनुकंपा अवसर पाया दोनों ने।
प्रथम बना इतिहास संघ का, जन्म धरा चमकाई।।

साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी का निर्देशन मंगल।
साध्वीगण का शुभ संरक्षण, मिलता पल-पल संबल।
साध्वी कंचनप्रभाजी आदि ने, गण की गरिमा गाई।।

लय : नैतिकता की सुर----

निज आत्मा को तारी

● डॉ० समणी ज्योतिप्रज्ञा ●

गुरु चरणों में लक्षित पथ पर पग-पग वरो विजय हो,
जीवन मंगलमय हो।

मुंबई पावस महाश्रमण की सन्निधि मंगलकारी,
उच्च मनोबल सन्मुख तेरे, बाधाएँ सब हारी,
संयम अरु संधारा दोनों, सफल हुए निर्णय हो।

वर्धमान भावों से होती, कर्म कट की ठेरी।
समता साधक को मिलती है, दिव्य सुखों की भेरी,
साध्वीप्रमुखा चरण शरण में, सुकृत का संचय हो।

साध्वीवर्या श्रमणी समणी योग मिला सुखकारी,
अनशन नौका में शोभित हो, निज आत्मा को तारी,
साध्वी पावनप्रज्ञाजी अब, पाओ सुख अक्षय हो।

लय : नैतिकता की----

शिवशंकर को जिसने पूजा

- समणी समत्वप्रज्ञा

पावनप्रज्ञा नाम यह पावन, अमर बना इतिहास में
अनशन का यह दृश्य है पावन, अमर बना इतिहास में
गुरु किरपा का अमृत वरसे, गुरु भक्ति हर साँस में
गुरु ही साँसों की सरगम तेरे, गुरु है नसनस में हरदम तेरे
जयकारा लगता मनभावन, रहता हर अहसास में गुरु किरपा।

जागी जन्मों की सचमुच ही पुण्याई है
साध्वी वेश यह सचमुच ही वरदाई है
ममता त्यागी तुमने, समता बहती तन में
सौम्य मुरत यह मनहारी है, शांत सुधारस की दिव्य क्यारी है।

वत्सलता हमपे जो तुने वरसाई है
मासी ममता जो हमने सबने पाई है
कृतज्ञता के वह स्वर, शुभ संस्कारों के स्वर
ध्यान हमारा रखवाती तुम
भूल न पाएँगे ममता की धुन।

जबरो काम कर्यो

● समणी मधुरप्रज्ञा ●

जबरो काम कर्यो, जबरो काम कर्यो।
पावन प्रज्ञा जी जबरो काम कर्यो।।

मोह माया ने छोड़ी थे तो भीतर स्यूं लय जोड़ी।
शरीर स्यूं भी मोह नहीं जीवन धारा ने मोड़ी।।

आत्म शक्ति ने तोड़ी थे तो मन मजबूती धारी।
गुरु महाश्रमण चरणों में अनशन री है छटा निराली।।

मुंबई नंदनवन गुरु चरणों आनंद लहरां आवे।
हो बड़भागी साध्वीप्रमुखाश्री जी साज दिरावे।।

साध्वीवर्याजी और संत-सत्या समणीजी मेलो।
समणश्रेणी री शान बढ़ाई अभिनंदन अब झेलो।।

अक्षय प्रज्ञाजी और प्रणवप्रज्ञाजी साथ निभायो।
हर पल हर क्षण साथ रहकर जीवन ने सरसायो।।

वीर बणकर सहो वेदना समता रस में झूलो।
आत्मा स्यूं इकतारी होयां देसी मुगति हेलो।।

लय : पुर में पड़ह---

ले ली गुरुवर शरणन्

● समणी कमलप्रज्ञा, समणी करुणाप्रज्ञा, समणी सुमनप्रज्ञा ●

पावन नाम काम किया पावन, मुख-मुख अतिशय वर्णन
ले ली गुरुवर शरणन्---

जीवन नैय्या सौपी जागृत जीवन जीया धन-धन
ले ली गुरुवर शरणन्---

साधिक छब्बीस वर्ष बिताये, समण श्रेणी परिसर में,
स्वच्छ-शांत-उपशांत, सुघड़ता छाप अनोखी संघ में,
समझदार-व्यवहार मधुरता-मृदुता शोभे आनन।
ले ली गुरुवर शरणन्---

घोर असाता कष्ट वेदना राखी दिल में समता,
बहन-भाणजी योग मिला-अंतस् में जागी क्षमता,
उदाहरण उज्ज्वलमय उत्सव जय बोले नंदनवन।
ले ली गुरुवर शरणन्---

पुष्पा से पावनप्रज्ञा सति संधारा जयकारा,
प्रणवनाद नित अक्षय निधि, (अब) मोक्षमार्ग अवधारा,
भैक्षव गण गुरु ग्यारवें गणधर-गाथा गाए जन जन।
ले ली गुरुवर शरणन्---

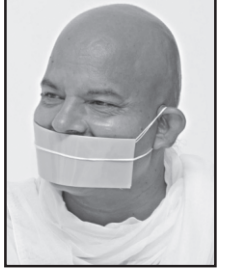
लय : संयममय जीवन हो---



उपासना

(भाग - एक)

□ आचार्य महाश्रमण □



(क्रमशः) सामायिक के दौरान कभी-कभी मन में चंचलता अथवा राग-द्वेष का भाव भी आ सकता है। श्रावक यह प्रयास करे कि जितना संभव हो, मैं राग-द्वेष के भावों से विरत रहूँ। सामायिक में यदि व्यापार संबंधी बातें की जाती हैं, राजनीति और अनेक प्रकार की सांसारिक बातों की जाती हैं तो सामायिक की आराधना में कुछ खलना हो सकती है। इतना ही नहीं, यदि व्यापार आदि संबंधी विचार या चिंतन मन में भी आ जाए तो भी सामायिक में दोष लग जाता है। सामायिक अपने आपमें एक बड़ा व्यापार है। जैसे गृहस्थ लोग व्यापार करते हैं और पैसा कमाते हैं, वैसे ही सामायिक करने वाला साधक भी आध्यात्मिक कमाई करता है। इसका बहुत बड़ा आध्यात्मिक मूल्य है।

एक ऐतिहासिक प्रसंग के माध्यम से इस बात को स्पष्ट किया गया है कि सामायिक का कितना बड़ा मूल्य है। भगवान् महावीर का पूणिया नामक श्रावक था। वह पूणियाँ बेचकर अपनी आजीविका चलाता था, बहुत संतोषी व्यक्ति था। एक बार राजगृह नगर में भगवान् महावीर का आगमन हुआ। राजा श्रेणिक भगवान् महावीर के दर्शनार्थ पहुँचा और अगले भव का नरकगति का जो आयुष्य बंधा हुआ था, उसे विफल करने का उपाय पूछा। श्रेणिक ने कहा-प्रभो! मैं आपका भक्त नरक में जाऊँ, यह बात शोभास्पद नहीं लगती। इसलिए नरक टल जाए, ऐसा कोई उपाय हो तो बताएँ। भगवान् महावीर तो वेत्ता थे। वे जानते थे कि नरक को टालने का कोई उपाय नहीं है। फिर भी राजा श्रेणिक को समझाने के लिए भगवान् ने कहा-श्रेणिक! पूणिया नामक श्रावक मेरा भक्त है। वह बहुत सामायिक करता है। तुम उससे मात्र एक सामायिक खरीद लो तो तुम्हारा नरक-गमन टल सकता है। श्रेणिक ने कहा-प्रभो! यह तो आसान काम है। सम्राट श्रेणिक पूणिया के घर गया। सम्राट का इस कुटिया में आना कैसे हुआ? कोई काम था तो आप मुझे आदेश देते। मैं वहाँ हाजिर हो जाता। आपने यहाँ पधारने का कष्ट क्यों किया? हालाँकि मेरे लिए तो यह खुशी का विषय है कि मेरे घर में आपके चरण-स्पर्श हो गए। आप हमारे मालिक हैं, फरमाइए, मेरे लिए क्या आदेश है? सम्राट श्रेणिक ने कहा-पूणिया! अभी मैं सम्राट की हैसियत से नहीं आया हूँ। अभी तो मैं याचक बनकर आया हूँ। पूणिया-आप तो हमारे मालिक हैं, दाता हैं। हम आपसे माँग सकते हैं। आप मेरे से क्या माँगने आए हैं? श्रेणिक-पूणिया! जो चीजें मेरे पास हैं, वे तुम्हारे पास नहीं हैं और जो तुम्हारे पास हैं, वह मेरे पास नहीं हैं। पूणिया-ऐसी कौन-सी चीज चाहिए, जो आपके पास नहीं है? श्रेणिक-मुझे ज्यादा कुछ नहीं चाहिए। तुम बहुत सामायिक करते हो। बस, एक सामायिक मुझे दे दो। उसका जितना मूल्य लेना चाहो, ले लेना। पूणिया-राजन्! मेरे पास जो कुछ है, वह सब कुछ आपका ही है। मैं आपके किसी काम आ सकूँ, इससे बढ़कर क्या बात होगी? श्रेणिक-तो बोलो, तुम्हारी सामायिक का कितना मूल्य है? पूणिया-यह तो मैं नहीं जानता। श्रेणिक-तुम जितना चाहो, उतना धन ले लो। पूणिया-राजन्! यह अध्यात्म का सौदा है। इसमें मनगढ़ंत मूल्य का निर्धारण नहीं हो सकता। श्रेणिक-इसका उचित मूल्यांकन कौन कर सकता है? पूणिया-महाराज! भगवान् महावीर इस व्यापार के प्रमुखतम व्यवसायी हैं। उनके अतिरिक्त सही मूल्यांकन कौन करेगा?

राजा श्रेणिक पूणिया को साथ लेकर भगवान् के पास पहुँचा। पूर्व में हुए संपूर्ण वृत्तांत को सुनाकर कहा-भगवन्! आप ही त्राता हैं, वेत्ता हैं। बताइए, मैं इसे एक सामायिक का कितना मूल्य दूँ? प्रभु महावीर ने कहा-श्रेणिक! एक सामायिक की दलाली करने का मूल्य तुम्हारे राज्य के समग्र वैभव से कई गुना अधिक है। तब सामायिक का मूल्य कितना होगा, तुम स्वयं सोच लो। अब सम्राट श्रेणिक समझ गया कि सामायिक का मूल्य चुकाया नहीं जा सकता और सामायिक को खरीदे बिना मेरा नरक-गमन टल नहीं सकता यानी मुझे नरक में तो जाना ही पड़ेगा। जैन साहित्य का कथन है कि राजा श्रेणिक को हिंसा में आसक्ति आदि कारणों से नरक में जाना पड़ा। वे वर्तमान में नरक में हैं किंतु हजारों वर्ष बाद वे नरक से निकलकर आने वाले उत्सर्पिणी काल में इसी भरत क्षेत्र में भगवान् ऋषभ की तरह प्रथम तीर्थंकर बनेंगे।

प्रस्तुत प्रसंग के माध्यम से यह अवबोध देने का प्रयास किया गया है कि सामायिक करना कोई सामान्य बात नहीं है, बहुत उत्तम बात है। इसलिए श्रावक को प्रतिदिन सामायिक करने का अभ्यास या प्रयास करना चाहिए। मैं प्रायः श्रावक समाज को प्रेरणा दिया करता हूँ कि प्रतिदिन एक सामायिक कर सको तो बहुत अच्छी बात है। यदि रोजाना न भी कर सको तो एक महीने में चार कर लो। यदि चार भी न कर सको तो कम से कम दो तो कर लो। जब दो के लिए भी नकारात्मक स्वर सुनाई देता है तब मैं और न्यूनता में चला जाता हूँ और कहता हूँ कि एक तो कर लो, ताकि तुम्हारे जीवन में सामायिक का क्रम तो शुरू हो जाए।

आदमी सामायिक करे उस काल में तो समता रहे ही। अच्छा तो यह हो कि एक सामायिक का प्रभाव दिन भर बना रहे। जैसे एक बार आदमी पर्याप्त मात्रा में भोजन कर लेता है। उस भोजन का प्रभाव कई घंटों तक बना रहता है। आदमी को ऊर्जा प्राप्त होती रहती है और वह काम करता रहता है। इसी प्रकार सामायिक के अभ्यासी व्यक्ति के मन, वचन और शरीर पर भी सामायिक का प्रभाव बना रहे। सामायिक की गहराई में जाकर आदमी यह चिंतन करे कि सामायिक में तो मुझे विशेष साधना करनी ही है, उसके अतिरिक्त भी जहाँ तक संभव हो सके, मैं समता का प्रयोग करूँ। चाहे वार्तालाप करूँ, चाहे भोजन करूँ अथवा अन्य कोई कार्य करूँ, प्रत्येक कार्य राग-द्वेष मुक्त होकर करूँ। वार्तालाप के दौरान व्यक्ति यह ध्यान रखे कि मैं उत्तेजना में न आ जाऊँ, मुझे गुस्सा/आक्रोश न आ जाए, समता से उत्प्रेरित हो बड़े सहज भाव से बात करूँ। भोजन करते समय भी आदमी यह सोचे कि मुझे समता का अभ्यास करना है। इसलिए मनोज्ञ भोजन में रागात्मक भाव न आए और अमनोज्ञ भोजन में द्वेषात्मक भाव न आए। आदमी का यह लक्ष्य बन जाए कि मुझे समता का प्रयोग करना है तो वह समता को पुष्ट कर सकता है। यदि लक्ष्य ही न बने, जीवन

ढरें की तरह चलता रहे तो विकास की कोई विशेष संभावना नहीं रहती। समता में जो सुख है, वह विशिष्ट होता है।

श्रीमद् भगवद्गीता में स्थितप्रज्ञ की बात कही गई है। स्थितप्रज्ञता और समता मुझे एक ही प्रतीत होती हैं। समता है तो स्थितप्रज्ञता है और स्थितप्रज्ञता है तो समता है। दोनों एक ही बात है। जब अर्जुन ने श्रीकृष्ण से प्रश्न किया कि 'स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशवः', समाधिस्थ स्थितप्रज्ञ किसे कहते हैं? तब समाधान की भाषा में श्रीकृष्ण ने कहा-

**प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्यार्थ मनोगतान्।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते।।**

हे अर्जुन! जब साधक मनोगत सभी कामनाओं को छोड़ देता है और अपने आपमें संतुष्ट रहता है। वह स्थितप्रज्ञ कहलाता है। जहाँ विषमता है वहाँ पाप है। जहाँ समता है वहाँ धर्म है। अपने आपको यदि प्रसन्न बनाए रखना है तो समता का अभ्यास आवश्यक है। अखंड प्रसन्नता तब प्राप्त होती है जब आदमी राग-द्वेष मुक्त हो जाता है। अनुकूल प्रसंग आने पर राग का भाव नहीं और प्रतिकूल प्रसंग आने पर द्वेष का भाव नहीं, दुःख का भाव नहीं, जब इस भूमिका की प्राप्ति हो जाती है तब आदमी को सतत प्रसन्नता की प्राप्ति हो सकती है। एक राजा अपने गुरु के पास गया और निवेदन किया-गुरुदेव! पूर्व पुण्याई के योग से मुझे सत्ता मिली है किंतु चित्त में शांति नहीं रहती। आए दिन विभिन्न घटना प्रसंग आते रहते हैं। उनसे मन उद्वेलित हो जाता है। आप मुझे कोई ऐसा मार्गदर्शन दें जिससे मैं राज्य का संचालन भी कर सकूँ और शांति के साथ रह सकूँ।

गुरु ने कहा-राजन्! एक मंत्र याद कर लो 'यह भी बीत जाएगा'। इस एक वाक्य को जीवन में अपना लो, आत्मसात् कर लो, तुम्हें शांति मिल जाएगी। राजा ने यह वाक्य अपनी अंगूठी में अंकित करवा लिया। जब कभी अनुकूलता का प्रसंग आता तो राजा सोचता-मुझे ज्यादा खुशी नहीं मनानी चाहिए क्योंकि यह भी बीत जाएगा। यह बात भी कभी समाप्त हो जाएगी। जब प्रतिकूल प्रसंग आता, राजा सोचता-यह दुःख का प्रसंग भी बीत जाएगा इसलिए मुझे दुःखी नहीं बनना चाहिए। इस प्रकार अभ्यास करते-करते राजा समतावान हो गया। वह तनाव मुक्त भी हो गया और सहज प्रसन्नता की स्थिति भी प्राप्त हो गई।

आवश्यक निर्युक्ति में बताया गया-

**जो न विवद्वद् रागे न वि दोसे दोण्ड मज्झारम्भि।
सो होइ उ मज्झत्थो सेसा सवे अमज्झत्था।।८०३।।**

जो न राग में वर्तन करता है और न द्वेष में वर्तन करता है, दोनों से स्पृष्ट न होकर मध्य में रहता है, वह मध्यस्थ होता है। शेष सभी अमध्यस्थ होते हैं। सामायिक शब्द का एक निरुक्त है, जिसमें सम-मध्यस्थ भाव की आय यानी उपलब्धि होती है, वह सामायिक है। सामायिक से सावद्योग की विरति होती है। इस पवित्र अनुष्ठान को करने से आदमी बहुत पापों से बच जाता है और आत्म-कल्याण के पथ पर अग्रसर हो जाता है।

खाद्य-संयम

भोजन जीवन की एक अनिवार्यतम अपेक्षा है। शरीर को टिकाए रखने के लिए हर आदमी को भोजन करना होता है। भोजन करना एक बात है। विवेकपूर्ण भोजन करना दूसरी बात है।

प्रश्न होता है कि भोजन कैसा होना चाहिए? आयुर्वेद में समाधान दिया गया-मित, हित और ऋत भोजन होना चाहिए। प्रश्न हुआ-मिताहार क्या है? यह व्यक्तिसापेक्ष प्रश्न है। एक व्यक्ति दो हलकी-फुलकी चपातियाँ भी नहीं खा सकता और एक व्यक्ति बीस फुलके खा लेता है। वह एक दिन नहीं प्रतिदिन खाता है, किसको मित आहार मानें और किसको अमित आहार? हमें एक कसौटी निश्चित करनी होगी।

कसौटी यह है-भोजन के बाद शरीर में भारीपन न आए, शरीर हलका बना रहे। इन्द्रियाँ प्रसन्न रहे, मन प्रसन्न रहे, चिंतन स्वस्थ रहे, सोचने की शक्ति, काम करने की शक्ति बनी रहे तो मानना चाहिए कि भोजन परिमित हुआ है। यदि भोजन के बाद सोना पड़े, सारी शक्तियाँ कुटिल हो जाएँ तो मानना चाहिए कि भोजन परिमित नहीं हुआ है। यह एक कसौटी है, जिसके आधार पर प्रत्येक व्यक्ति यह जान सकता है कि मैं परिमित खा रहा हूँ या अपरिमित?

चिकित्सक ने ग्रामीण किसान को सलाह दी-भोजन करते समय पानी पीना हो तो भोजन के बीच में पानी पीना चाहिए। पहले भी नहीं और भोजन के तत्काल बाद भी नहीं। किसान ने इस बात को पकड़ लिया। एक दिन उसने तीन-चार बाजरे की मोटी-मोटी रोटियाँ खा ली। उसके बाद याद आया-अरे! आज बीच में पानी तो पीया ही नहीं। पत्नी से कहा-'पानी लाओ।'

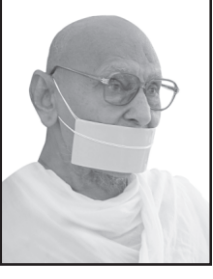
'आपने भोजन कर लिया। अब भोजन के बाद पानी पीना नहीं है।'

'नहीं, तुम पानी लाओ।'

पत्नी पानी ले आई। उसने पानी पीया और बोला-'तीन-चार रोटियाँ फिर ले आओ। पानी भोजन के बीच में हो जाएगा।'

तीन-चार रोटियाँ पहले खा ली, तीन-चार रोटियाँ बाद में खा ली। हम इसको मिताहार कहें या अमिताहार?

(क्रमशः)



संबोधि

□ आचार्य महाप्रज्ञ □ बंध-मोक्षावाद

ज्ञेय-हेय-उपादेय

भगवान् प्राह

(१६) चेतना विषयासक्ता, हिंसां समनुधावति।
आत्मानं प्रति संहत्य, तामहिंसापदं नयेत्॥

जो चेतना विषयों में आसक्त है, वह हिंसा की ओर दौड़ती है। इसलिए साधक उस चेतना को आत्मा की ओर मोड़कर उसे अहिंसा में प्रतिष्ठित करे।

(१७) सति देहे सेन्द्रियेऽस्मिन्, सति चेतसि चञ्चले।
इन्द्रियार्थाः प्रकृत्येष्टाः, नेष्टं तेषां विसर्जनम्॥

जब तक शरीर और इंद्रियाँ हैं, जब तक मन चंचल है, तब तक स्वभावतः इंद्रियों के विषय अच्छे लगते हैं, उनका परित्याग अच्छा नहीं लगता।

(१८) अहिंसार्थं मया प्रोक्तं, आत्मसाम्यं चिराध्वनि।
तदर्थं प्राप्तदुःखानि, सोढव्यानि मुमुक्षुभिः॥

साधना की चिर परंपरा में मैंने आत्म-साम्य का निरूपण अहिंसा के विकास के लिए किया है। मुमुक्षु व्यक्तियों को अहिंसा की साधना के मध्य जो भी दुःख प्राप्त हों, उन्हें सहना चाहिए।

(१९) न देहोऽधर्ममूलोऽसौ, धर्ममूलो न चाप्यसौ।
योजितो योजकेनासौ, धर्माधर्मकरो भवेत्॥

देह न अधर्म का मूल है और न धर्म का। योजक के द्वारा जिस प्रकार उसकी योजना की जाती है, उसी प्रकार वह धर्म या अधर्म का मूल बन जाता है।

(२०) नास्य शक्तिः परिस्फीता, विकारोद्दीपनं सृजेत्।
तेनाऽसौ कृशतां नेयः, यावदुत्सहते मनः॥

बढ़ी हुई शारीरिक शक्ति विकारों का उद्दीपन न करे, जब तक मन का उत्साह बढ़ता रहे—वह अमंगल का चिंतन न करे, तब तक शरीर को तप के द्वारा कृश करना चाहिए।

(२१) नात्मासौ शक्तिहीनानां, गम्यो भवति सर्वदा।
योगक्षेमौ हि तेनास्य, कार्यावपि मुमुक्षुणा॥

शक्तिहीन मनुष्यों के लिए यह आत्मा गम्य नहीं होता, यह शाश्वत सिद्धांत है, इसलिए मुमुक्षु व्यक्तियों के लिए शरीर का योग और क्षेम भी करणीय होता है।

(२२) न केवलमसौ देहः, कृशीकार्यो विवेकिना।
न च बृंहणीयोस्ति, मतं संतुलनं मम॥

मेरा यह अभिमत है—विवेकी व्यक्ति न देह को ज्यादा कृश करे और न ज्यादा उपचित। देह का संतुलन ही सबसे अच्छा है।

(२३) इंद्रियाणि प्रशान्तानि, विहरेयुर्यथा यथा।
तथा तथा प्रवृत्तीनां, दैहीनां संयमो मतः॥

उपशांत इंद्रियाँ जैसे-जैसे प्रवृत्त होती हैं, वैसे-वैसे ही मनुष्य की दैही—शारीरिक प्रवृत्तियाँ संयत होती चली जाती हैं।

(२४) दोषनिर्हरणायेष्टा, उपवासाद्युपक्रमाः।
प्राणसंधारणायासौ, आहारो मम सम्मतः॥

दोषों को बाहर निकालने के लिए उपवास आदि उपक्रम विहित हैं। प्राण को धारण करने के लिए आहार भी मुझे सम्मत है।

(२५) अहिंसाधर्मसंसिद्धौ, विवेको नाम दुष्करः।
तेन वत्स! मया धर्मः, घोरोऽसौ प्रतिपादितः॥

अहिंसा धर्म की संसिद्धि—साधना में विवेक होना बहुत दुष्कर है। वत्स! इसी दृष्टि से धर्म को मैंने घोर कहा है।

(२६) नाज्ञानचेष्टितं वत्स! न च संक्लेशसंकुलम्।
नार्त्तध्यानदशां प्राप्तं, तपो ममास्ति सम्मतम्॥

वत्स! मैंने उसी तप का अनुमोदन किया है, जिसमें न अज्ञान संवलित चेष्टाएँ हैं, न संक्लेश है और न आर्त्तध्यान है।

(२७) इंद्रियाणां मनसश्च, विषयेभ्यो निवर्तनम्।
स्वस्मिन् नियोजनं तेषां, प्रतिसंलीनता भवेत्॥

इंद्रिय और मन का विषयों से निवर्तन तथा अपने-अपने गोलक में उनका नियोजन प्रतिसंलीनता है।

प्रतिसंलीनता के चार प्रकार हैं—(१) इंद्रिय संलीनता—इंद्रियों के विषयों पर नियंत्रण करना। (२) कषाय संलीनता—कषायों पर विजय पाना। (३) योग संलीनता—मन, वचन और शरीर की प्रवृत्तियों पर नियंत्रण रखना। (४) विविक्त-शयन-आसन—एकांत स्थान में सोना-बैठना।

(क्रमशः)

अवबोध

□ मंत्री मुनि सुमेरुमल 'लाडनू' □

कर्म बोध

बंध व विविध

प्रश्न १३ : बंधने वाली कर्म वर्गणाएँ क्या आठों कर्मों में समान रूप में विभक्त होती हैं या न्यूनाधिक?

उत्तर : जिस कर्म की स्थिति ज्यादा हो उसके हिस्से में कर्म पुद्गल ज्यादा आएंगे किंतु वेदनीय कर्म कम स्थिति के होंगे, फिर भी उसके हिस्से में कर्म प्रदेश ज्यादा आएंगे। आयुष्य कर्म एक बार बंधता है, उस समय में भी सबसे थोड़े कर्म पुद्गल उसके साथ जुड़ते हैं। उससे विशेषाधिक नाम व गोत्र दोनों के परस्पर में बराबर बंधते हैं। इनसे विशेषाधिकार ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, अंतराय कर्म परस्पर में तुल्य बंधते हैं। इनसे विशेषाधिकार मोहकर्म के पुद्गल बंधते हैं। इनसे विशेषाधिकार वेदनीय कर्म के हिस्से में आते हैं।

प्रश्न १४ : क्या कर्म के उदय के बिना भी कर्म का बंध हो सकता है?

उत्तर : नहीं, ऐसा कोई भी समय नहीं, बंध हो और उदय नहीं हो। संसारी जीवों के प्रतिक्षण कर्म का उदय चलता है।

प्रश्न १५ : कर्म का उदय चल रहा है, किंतु उसका बंध नहीं होता, ऐसा समय कभी आता है?

उत्तर : चौदहवें गुणस्थान के पंच ह्रस्वाक्षर उच्चारण जितने समय में यह प्रसंग जरूर बनता है। जब कर्म का उदय तो चलता है, पर बंध नहीं होता, क्योंकि वहाँ कर्म बंध का मुख्य हेतु आश्रव का पूर्ण निरोध हो चुका होता है।

प्रश्न १६ : नाम कर्म के उदय से पुण्य का बंध होता है। चौदहवें गुणस्थान में नाम कर्म का उदय चलता है, फिर वहाँ कर्म का बंध क्यों नहीं होता?

उत्तर : जहाँ पुण्य का बंध होता है, वहाँ नाम कर्म का उदय अवश्य रहता है। जहाँ नाम कर्म का उदय रहता है, वहाँ पुण्य का बंध हो ही, यह जरूरी नहीं है। यह एक सार्वभौम तथ्य है कि पुण्य बंध में नाम कर्म की नियमा (अनिवार्यता) है और नाम कर्म के उदय में पुण्य बंध की भजना (अनिवार्यता नहीं) है। चौदहवाँ गुणस्थान अयोगी है। बिना योग के कर्म बंध होता नहीं, इसलिए उसे अवंधक गुणस्थान माना है।

(क्रमशः)



अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का आयोजन

दिल्ली।

अणुव्रत विश्व भारती द्वारा निर्देशित अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का प्रथम दिवस सांप्रदायिक सौहार्द दिवस के रूप में अणुव्रत ट्रस्ट, दिल्ली द्वारा साध्वी डॉ० कुंदनरेखा जी के सान्निध्य में भिक्षु ऑडिटोरियम अध्यात्म साधना केंद्र, छतरपुर महारौली में आयोजित हुआ। साध्वीश्री के मंगलाचरण एवं दक्षिण दिल्ली तेमम के अणुव्रत गीत के साथ कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। अणुव्रत समिति ट्रस्ट के अध्यक्ष मनोज बरमेचा ने उपस्थित विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधियों एवं उपस्थित जनों का स्वागत व अभिनंदन किया।

इस अवसर पर साध्वी डॉ० कुंदनरेखा जी ने लगभग ६०० की संख्या में उपस्थित जनमेदिनी के मध्य कहा कि अणुव्रत मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा का महानतम उपक्रम है। भारत की स्वतंत्रता के समय जब मूल्यों का ह्रास हो रहा था हिंसा की बहुलता से दुनिया ग्रस्त थी, ऐसे विकट समय में आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का सिंहासन किया। अणुव्रत ११ नियमों में एक नियम है—सांप्रदायिक सौहार्द। नैतिकताविहीन धर्म से कभी आत्मबोध नहीं मिल सकता। आवश्यकता है अहिंसा युक्त धर्म को समझने की। इंसान में इंसानियत जीवित रहे तो निश्चित रूप से नए सवरे का अवतरण होगा।

इस अवसर पर साध्वी सौभाग्ययशा जी आदि साध्वियों ने अणुव्रत गीत का संगान किया। अणुव्रत विश्व भारती के मुख्य न्यासी तेजकरण सुराणा ने कहा कि अणुव्रत प्रकाश है तो अंधेरे को चीर उजालों को भर देता है। वी०के० शीरा दीदी प्रतिनिधि ब्रह्माकुमारी राज योग केंद्र ने कहा कि पानी का स्वभाव शीतल है वैसे ही अपने स्वभाव में शीतलता आ जाए तो सौहार्द बढ़ाया जा सकता है। सरदार बलदेव सिंह आचार्य गुरु ग्रंथ साहिब विद्या केंद्र ने कहा कि जाति, पंथ भेद आदि से ऊपर इंसानियत जीवित रहे, यही अणुव्रत कहता है।

दिल्ली सभा के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत ने कहा कि अणुव्रत ने छोटे-छोटे व्रतों की सुंदर फुलवारी दी है जो हर इंसान को सौरभ से भर देती है। अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के प्रबंध न्यासी के०सी० जैन ने कहा कि मनुष्य की मूल्यवत्ता है उसका आचरण। सुंदर व सत्य आचरण तो सांप्रदायिक सौहार्द की कुंजी है। हबीब उल्लाह अमीन प्रतिनिधि मुस्लिम समाज ने कहा कि केवल शब्दों से नहीं अपने सुंदर आचरणों से सांप्रदायिक सौहार्द वातावरण निर्मित किया जा सकता है। हम आभारी हैं गुरु तुलसी के जिन्होंने अणुव्रत अभियान का वरदान जगत को दिया। जगतगुरु बाबा सखी चंद प्रतिनिधि सनातन धर्म ने कहा कि अध्यात्म जगत

प्रकाश से भरा है, सभी प्रकार प्रकाशवान बने, क्योंकि प्रकाश को कभी भी विभक्त नहीं किया जा सकता।

डॉ० एम०डी० थॉमस डायरेक्टर इंस्टिट्यूट ऑफ हार्मनी और पीस स्टडीज ने कहा कि मानवीय मूल्य जिस दिन प्रतिष्ठित होंगे वह सर्वधर्म समन्वय का दिन होगा। अणुव्रत के जरिए इसकी पहल हो चुकी है। आर्य समाज के प्रतिनिधि रवि देव गुप्ता ने कहा कि धर्म आत्मा का धर्म है, पवित्रता और निर्मलता है इसे सभी याद रखें।

अणुव्रत गौरव मुमुक्षु धनराज वैद का प्रशस्ति पत्र व साहित्य से सम्मान किया गया। तेजकरण सुराणा ने प्रशस्ति पत्र का वाचन किया। अणुव्रत विश्व भारती की संगठन मंत्री डॉ० कुसुम लुनिया ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए। सभी अतिथियों का मोमेंटो व साहित्य भेंट कर सम्मान किया गया। आयोजन की सहयोगी संस्था अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास, तेरापंथी सभा, दिल्ली तेयुप, दक्षिण दिल्ली, महिला मंडल, टीपीएफ, दक्षिण दिल्ली सभा व अनेक संस्थाओं के पदाधिकारी एवं कार्यकर्तागण उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन मंत्री राजेश बैंगानी ने किया। सहमंत्री मनोज खटेड़ ने आभार ज्ञापित किया।

अहिंसा दिवस : अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतर्गत अहिंसा दिवस पर अणुव्रत समिति ट्रस्ट, दिल्ली ने राजघाट, गांधी समाधी पर अणुव्रत गीत का सामुहिक संगान किया। दिल्ली समिति के लगभग २०-२५ कार्यकर्ता राजघाट पहुँचे। वहाँ उपस्थित जनमेदिनी ने भी अणुव्रत गीत का साथ में संगान किया। अणुव्रत समिति अध्यक्ष मनोज बरमेचा, शांतिलाल पटावरी, राजेश बैंगानी, पवन गिडिया, राजीव महनोत, प्रियंका महनोत, चंद्र कोठारी, कमल सेठिया, दिनेश शर्मा, अजय सेठिया, मनीष महनोत, राज गुनेचा, मंजु बांठिया तथा कई अन्य सदस्यों ने भी कार्यक्रम में अपनी सहभागिता दर्ज कराई।

अणुव्रत प्रेरणा दिवस : अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का तीसरा दिवस अणुव्रत प्रेरणा दिवस के रूप में अणुव्रत समिति ट्रस्ट द्वारा दिल्ली में तीन क्षेत्रों में कार्यक्रम आयोजित किया गया। शासनश्री साध्वी संघमित्रा जी व शासनश्री साध्वी ललितप्रभा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, रोहिणी में आयोजित किया गया। अणुव्रत के बारे में विस्तृत प्रेरणा दी श्रावक समाज से आह्वान किया कि अणुव्रती बनने का प्रयास करें। संरक्षक सदस्य व रोहिणी सभा के महामंत्री राजेंद्र सिंधी ने अणुव्रत की जानकारी दी।

खिलौनी देवी धर्मशाला, पीतमपुरा में शासनश्री

रतनश्री जी के सान्निध्य में कार्यक्रम आयोजित हुआ। समिति के मंत्री राजेश बैंगानी ने अणुव्रत पर विस्तृत जानकारी दी। उसके पश्चात साध्वीवृंद ने सामुहिक अणुव्रत गीतिका का संगान किया। साध्वी रतनश्री जी ने अणुव्रत के छोटे-छोटे व्रतों के बारे में जानकारी दी। खिलौनी देवी धर्मशाला के ट्रस्टी राकेश महेश, व पीतमपुरा सभा के मंत्री सुरेंद्र मालू की उपस्थिति रही।

ओसवाल भवन में साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में अणुव्रत चेतना दिवस पर अणुव्रत समिति ट्रस्ट दिल्ली के संगठन मंत्री राजीव महनोत के अणुव्रत गीत के संगान से आयोजित हुआ। साध्वीश्री जी ने अणुव्रत से जुड़ने का आह्वान किया। अणुव्रत समिति ट्रस्ट के निवर्तमान अध्यक्ष शांतिलाल पटावरी तथा कार्यसमिति सदस्य मंजु बांठिया ने भी अपने विचार व्यक्त किए। अणुव्रत समिति ट्रस्ट के कार्यसमिति सदस्य प्रमोद घोड़ावत ने संचालन किया।

पर्यावरण शुद्धि दिवस : अणुव्रत समिति ट्रस्ट, दिल्ली द्वारा पर्यावरण शुद्धि दिवस पर दिल्ली ५ क्षेत्रों में ५०० पौधों का रोपण और वितरण किया। अध्यात्म साधना केंद्र, छतरपुर, ओसवाल भवन, विवेक विहार, तेरापंथ भवन विकास मंच, कृष्णानगर, तेरापंथ भवन, रोहिणी, खिलौनी देवी धर्मशाला एवं पीतमपुरा में कार्यक्रम आयोजित हुए। सभी जगह अणुव्रत के कार्यकर्ता अणुव्रत टी-शर्ट में उपस्थित रहे।

नशामुक्ति दिवस : अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के पाँचवें दिन नशामुक्ति दिवस पर अणुव्रत समिति ट्रस्ट ने दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में नुककड़ नाटक करवाकर जन चेतना में नशे के खिलाफ जागरूकता अभियान का प्रयास किया।

नुककड़ नाटक स्क्रिप्ट राइटर एवं निर्देशन मोहित कुमार, उप-निर्देशन श्रेया सहाय, सूत्रधार करीना, पात्र निशा, अदीबा, अध्यापक वंशिका, कैफुल, काजल, आरती स्वास्थ्य, पर्यवेक्षक अलीशा, कार्यक्रम सहयोगी अणुव्रत समिति ट्रस्ट के प्रचार प्रसार मंत्री दिनेश शर्मा, कालू भाई, शिवम, नस्मू, आजाद सावरिया, अरविंद शर्मा एवं स्थानीय निवासियों का सहयोग रहा।

आयुष मॉडर्न पब्लिक स्कूल, सादतपुर में प्रधानाचार्य मंदाकिनी और स्कूल स्टाफ का सहयोग रहा। करावल नगर क्षेत्र में कार्यक्रम दक्ष उद्धार ट्रस्ट के सदस्य पंकज कुमार, अजय सिंह नेगी, रूपेश सारस्वत दयाल पुर का सहयोग रहा। गोकुलपुरी क्षेत्र में प्रतिष्ठा युवा संगठन का सहयोग रहा। नशामुक्ति दिवस पर अणुव्रत समिति ट्रस्ट का उद्देश्य नुककड़ नाटक के माध्यम से नशामुक्ति का संदेश जन-जन तक

पहुँचाना था।

अनुशासन दिवस : अनुशासन दिवस का आयोजन शासनश्री साध्वी संघमित्रा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, रोहिणी में अणुव्रत समिति ट्रस्ट द्वारा आयोजित किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। साध्वीश्री जी ने कहा कि हमें अनुशासन में रहकर ही अपने जीवन को आगे बढ़ाना चाहिए।

अणुव्रत समिति ट्रस्ट के अध्यक्ष मनोज बरमेचा ने कहा कि कैसे हम अनुशासित रहकर अपने जीवन में बदलाव ला सकते हैं। अणुव्रत समिति सदस्य व रोहिणी सभा महामंत्री राजेंद्र सिंधी व अन्य अनेक कार्यकर्ताओं का सहयोग रहा। कार्यक्रम में रोहिणी सभा के अध्यक्ष विजय जैन की भूमिका रही।

जीवन विज्ञान दिवस : जीवन विज्ञान दिवस का कार्यक्रम अणुव्रत समिति ट्रस्ट द्वारा साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में ओसवाल भवन, विवेक विहार में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में प्रेम कुमार त्यागी, उप शिक्षा निदेशक पूर्वी दिल्ली तथा विभिन्न विद्यालयों के प्रधानाचार्य तथा शिक्षकगण उपस्थित हुए। भारत ब्लाइंड विद्यालय के ब्लाइंड छात्रों ने अणुव्रत गीत का संगान किया। समिति के अध्यक्ष मनोज बरमेचा ने सभी संस्था के पदाधिकारी एवं संपूर्ण श्रावक समाज का स्वागत किया।

साध्वीश्री जी ने कहा कि किस तरह हम जीवन विज्ञान को अपने जीवन में उतारकर सफल बन सकते हैं। मुख्य अतिथि प्रेम कुमार त्यागी ने इस तरह के आयोजन के लिए संस्था का धन्यवाद दिया। अणुविभा संगठन मंत्री डॉ० कुसुम लुनिया ने अणुव्रत के बारे में जानकारी दी। हलचल जैन द्वारा जीवन विज्ञान गीत का संगान किया गया। जीवन विज्ञान प्रशिक्षक रमेश कांडपाल ने छोटे-छोटे प्रयोग करवाए। अणुविभा की राष्ट्रीय उच्च शिक्षा प्रभारी हंसा संचेती ने अपने वक्तव्य में बताया कि १५० जीवन विज्ञान ट्रेनर उपलब्ध हैं, जिनका उपयोग जीवन विज्ञान प्रशिक्षण के लिए हो सकता है। आभार ज्ञान समिति के मंत्री राजेश बैंगानी ने किया। मोमेंटो, पटका व साहित्य द्वारा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रेम कुमार त्यागी का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन दिल्ली समिति के जीवन विज्ञान संयोजक बाबूलाल दुगड़ ने किया। कार्यक्रम की संरचना व व्यवस्था में रवि शर्मा, प्रियंका, परी महनोत, मनीष महनोत, मोहित शर्मा, पवन गिडिया, मीडिया प्रभारी ऋषभ वैद, तेजमल वैद, मंजु बांठिया व राज गुनेचा का सहयोग रहा।

मेधावी छात्र व प्रोफेशनल सम्मान समारोह

फरीदाबाद।

मेधावी छात्र एवं प्रोफेशनल सम्मान समारोह का आयोजन टीपीए, फरीदाबाद द्वारा तेरापंथ भवन में किया गया। समारोह का संचालन टीपीए सचिव रोहित वैद ने किया। समारोह की शुरुआत बहादुर सिंह दुगड़ द्वारा नमस्कार महामंत्र के साथ की गई। जिसके बाद फरीदाबाद सभा अध्यक्ष गुलाबचंद वैद, अणुव्रत समिति अध्यक्ष लाजपत राय जैन, महिला मंडल अध्यक्षा ललिता वैद, तेयुप अध्यक्ष गौतम गोलछा ने सभी मेधावी छात्रों एवं प्रोफेशनल की प्रशंसा कर प्रोत्साहन बढ़ाया। समारोह का तकनीकी संचालन कर रहे लोकेश चोपड़ा ने टीपीए परिचयात्मक वीडियो

दिखाकर सभी को टीपीए के उद्देश्य एवं फोरम द्वारा किए जा रहे आयामों से अवगत कराया। टीपीए नॉर्थ जोन अध्यक्ष विजय नाहटा ने बच्चों के कठिन परिश्रम की प्रशंसा की और उन्हें आगे बढ़ने के लिए टिप्स भी दिए।

टीपीए, फरीदाबाद के अध्यक्ष राकेश सेठिया ने भी बच्चों की उपलब्धियों का गुणगान करके उत्साह बढ़ाते हुए उनका स्वागत किया। चार प्रतिभाशाली वक्ताओं की टीम (टीपीए संयुक्त सचिव निकिता जैन, फेमिना संयोजक खुशबू सेठिया, कार्य समिति सदस्य ममता सामसुखा एवं सिद्धांत जैन) ने सभी छात्रों एवं प्रोफेशनल का संक्षिप्त परिचय देकर बखूबी कार्यक्रम

को गति प्रदान की। मेधावी छात्रों और प्रोफेशनल में से कुछ ने अपने अनुभवों को साझा कर सभागार को भावुक कर दिया।

एनईसी सदस्य सपना जैन एवं टीपीए फेमिना सह-संयोजक जागृति गुलगुलिया, नेहा दुगड़ एवं रोमन वैद ने सभी छात्रों के लिए टीम बिल्डिंग एवं क्विज एक्टिविटी भी करवाई। समारोह के अंत में टीपीए कोषाध्यक्ष लोकेश चोपड़ा ने कार्यक्रम का संचालन कर रही पूरी टीम की प्रशंसा करते हुए सभी का आभार प्रकट किया और मेधावी बच्चों को उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित की।

रोमांचक प्रतियोगिता का आयोजन

बोरावड़।

तेरापंथ भवन में साध्वी प्रांजलप्रभा जी के सान्निध्य में विकास महोत्सव की संध्या पर रोमांचक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। मंगलाचरण प्रकाश लोढ़ा द्वारा किया गया। कैलाश जैन ने बताया कि दो चरणों में आयोजित हुई इस प्रतियोगिता में ४-४ व्यक्तियों के कुल २७ ग्रुप में १०८ प्रतिभागियों ने भाग लिया।

प्रथम चरण में संभागियों ने गीत का संगान किया, वहीं दूसरे चरण में तत्त्व ज्ञान व सामान्य ज्ञान से संबंधित लिखित प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें सभी प्रतिभागियों के दिमाग की कसरत कराई गई। प्रतियोगिता में साध्वी गौतमप्रभा जी का सहयोग रहा। संचालन साध्वी मध्यस्थप्रभा जी द्वारा किया गया।



साध्वी पावनप्रज्ञा जी के प्रति काव्यात्मक उद्गार

वीर भिक्षु की जय हो

● मुनि दिनेश कुमार ●

वीर भिक्षु की जय हो।
महाश्रमण गुरु आशीषों से जीवन ज्योतिर्मय हो।
साध्वी पावन प्रज्ञा जी का अनशन मंगलमय हो।।

इच्छाएँ सब पूर्ण हो गई इच्छा एक रही है।
मोक्ष महल को प्राप्त करूँ मैं इच्छा एक यही है।
महाश्रमण गुरुवर से उपकृत श्रद्धा प्रणत हृदय हो।।

मुख्यमुनिश्री फली भावना संयम पाया सुखकर।
पावन प्रज्ञा चारित्रात्मा अनशन भी क्षेमकर।
पुलकित है अंतर आत्मा से सहज, प्रणव, अक्षय हो।।

साध्वीप्रमुखा साध्वीवर्या अनुकंपा करवाते।
साध्वीवृंद करे नित सेवा प्रमुदित सब हो जाते।
कृतज्ञता भावों से भाषित पावन प्रज्ञा लय हो।।

गुरु की करुणा इतनी करुणा वचनातीत कहाँ।
गुरु-वत्सलता देख-देखकर जन-जन मन हर्षाएँ।
चले साधना रत्नत्रय की पावन भाग्योदय हो।।

जिन भावों से संयम धारा तप अनशन स्वीकारा।
बढ़ते-चढ़ते परिणामों से कटे कर्म की कारा।
समता की सूरत है पावन सधन निर्जरामय हो।।

लय : संयममय जीवन हो---

मन इच्छित अरमान फले

● साध्वी अनुशासनश्री ●

आत्मरमण हित पावनप्रज्ञा अनशन सरिता में बहाएँ।
मोक्षश्री का वरण करण भावों की श्रेणी चढ़ते जाएँ।।

कृपा सिंधु की कृपादृष्टि से मन इच्छित अरमान फले।
रोग शोक दुविधाएँ सारी मनोबली के दूर टले।
शांत सुधामृत के सिंचन से जलन तुम्हारी कोसो जाएँ।।

भाग्यशाली पावन प्रज्ञा जी प्रभु नित दर्श दिराते हैं।
भक्तामर का पुनरावतन कर स्वाध्याय कराते हैं।
अग्रिम मंजिल की सामग्री बाँध गठरिया साथ दिराएँ।।

हाइमांस की है यह पुतली इस पर मोह नहीं करना।
सगे संबंधी ज्ञाती नाती सब कुछ है झूठा सपना।
गुणस्थान में आरोहण कर लक्षित मंजिल को अपनाएँ।।

साध्वीप्रमुखा साध्वीवर्या आत्म शक्ति को जगवाते।
आत्मा भिन्न शरीर भिन्न का अजपाजप जप करवाते।
महाश्रमण बरतारा सुखमय अपने से अपने को पाएँ।।

लय : प्रभो तुम्हारे पावन---

अनशन की महिमा भारी

● साध्वी मुदितयशा ●

साध्वी पावनप्रज्ञा जी की समता विस्मयकारी।
अनशन की महिमा भारी।।

समणीश्रेणी से आकर आत्मसाधना लक्ष्य बनाया,
गुरुवर महाप्रज्ञ की शरण मिली सौभाग्य सवाया,
सहज स्वच्छता कार्यकुशलता लगती सबको प्यारी।।

तन की तीव्र वेदना पर मन को मजबूत बनाया,
नहीं कराऊँगी मैं बड़ी चिकित्सा शौर्य जगाया,
दृढ़-संकल्पशक्ति का उदाहरण जीवन अविकारी।।

भगिनिसुता है प्रणव और भगिनी अक्षयप्रज्ञा जी,
सहयोगी बनकर दोनों ने पल-पल सेवा साझी,
समणी से श्रमणी जीवन की यात्रा मंगलकारी।।

गुरु चरणों में किया समर्पण तन, मन जीवन सारा,
गुरुमुख से ली दीक्षा गुरुमुख से पचखा संथारा,
गुरुवर ने माँझी बन तट से नैया पार उतारी।।

सर्व मनोरथ पूर्ण किए इच्छापूर्णा गुरुवर ने,
उत्साही पावनप्रज्ञा उद्यत भवजलनिधि तरने,
कर्ममुक्त बन पायो सत्वर मोक्ष सदन अधिकारी।।

साध्वीप्रमुखाश्री की सन्निधि अनुकंपा आलय में,
हाथ जुड़े रहते हैं हरदम कृतज्ञता की लय में,
प्रमोदभाव से प्रसन्नता से महके मन फुलवारी।।

नश्वर है जग की माया नश्वर है रिश्ते नाते,
शूरवीर तन की ममता तज आत्मोन्मुख बन जाते,
आत्मशक्ति का हुआ जागरण दुविधाएँ सब हारी,
आत्मलीन पावनप्रज्ञा अब आत्मा से इकतारी।।

लय : जहाँ डाल-डाल पर---

पुष्पा जीवन धन्य बना

● साध्वी सम्प्रतिप्रभा ●

नंदनवन संलेखन संथारा से आत्म पावन बना।
महाव्रतों की सौरभ से पुष्पा जीवन धन्य बना।।

मुनि हेम द्विशताब्दी वर्ष समण दीक्षा परिकर हर्षाया।
पाँच अक्टूबर श्रेणी आरोहण जन मन पुलकित बना।।१।।

समय नियोजन देखा तुममें, कला विलक्षण कण-कण में।
महामंत्र जप आराधन से अंतर्मुख पुनीत बना।।२।।

स्वच्छता में रखते अभिरुचि, है कलात्मक जीवनशैली।
संगीत स्वाध्याय से परिपूर्ण अनुपम जीवन बना।।३।।

संयम, समता, सहनशीलता ऊर्ध्वारोहण का है रास्ता।
समभावों से सही वेदना आत्मा गंतव्य महान बना।।४।।

अक्षय से पा प्रेरणा अक्षय से रुख तुमने जोड़ा।
प्रणव से अयाचित सहयोग पा अरमान सफल बना।।५।।

ज्योतिचरण की शरण शुभंकर मिटी सकल व्यथा।
गुरुकृपा से नंदनवन में धृतिबल अद्भुत महान बना।।६।।

आचार्य भिक्षु धम्म जागरण के आयोजन

सरदारशहर

आचार्यश्री भिक्षु स्वामी के २२९वें चरमोत्सव के अवसर पर तेयुप द्वारा तेरापंथ भवन में धम्म जागरण का आयोजन किया गया, जिसमें स्थानीय गायकों के सुमधुर गीतों द्वारा समस्त वातावरण भिक्षुमय बन गया। कार्यक्रम में साध्वी सुदर्शनाश्री जी का सान्निध्य रहा। साध्वीश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यक्रम हुआ।

कार्यक्रम में कन्या मंडल एवं किशोर मंडल ने अलग-अलग सामुहिक गीतिका का संगान किया। मोहनलाल बरड़िया, मनीष पटावरी, तेयुप अध्यक्ष लोकेश सेठिया, ऋषभ दुगड़, अर्हम सुराणा, संगीता बच्छावत, वर्षा बैद, भारती नाहटा आदि ने प्रस्तुतियाँ दी।

कार्यक्रम में श्रावक-श्राविका समाज की अच्छी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन धीरज छाजेड़ ने किया।

राजाजीनगर

आचार्य भिक्षु के २२९वें चरमोत्सव के उपलक्ष्य में तेरापंथ सभा ट्रस्ट, राजाजीनगर द्वारा धम्म जागरण का आयोजन तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया। धम्म जागरण की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। तेयुप, राजाजीनगर द्वारा संचालित भिक्षु श्रद्धा स्वर समूह और गगन बरड़िया, देवेन्द्र नाहटा एवं रेनु कोठारी ने अपने सुमधुर भिक्षु भजनों से वातावरण को भिक्तमय बनाते हुए अपने आराध्य भिक्षु स्वामी के प्रति भावांजलि व्यक्त की।

तेयुप मंत्री कमलेश चोरड़िया ने अपने आराध्य भिक्षु स्वामी के प्रति भावांजलि व्यक्त करते हुए सभी का स्वागत किया। सभा परिवार की ओर से उपाध्यक्ष अशोक चौधरी, सहमंत्री चंद्रेश मांडोत एवं तेयुप अध्यक्ष कमलेश गन्ना द्वारा गायक गगन बरड़िया, देवेन्द्र नाहटा, संजय मांडोत, अनिमेष चौधरी एवं रेनु कोठारी का जैन पट्ट द्वारा सम्मान किया गया।

इस अवसर पर सभा परिवार, तेयुप प्रबंधन मंडल, कार्यकारिणी सदस्य, किशोर मंडल, महिला मंडल व कन्या मंडल एवं श्रावक-श्राविका समाज की अच्छी उपस्थिति रही।

गंगाशहर

तेयुप, गंगाशहर द्वारा भिक्षु धम्म जागरण शासनश्री साध्वी शशिरेखा जी के सान्निध्य में शांति निकेतन में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ पवन छाजेड़ ने मंगलाचरण के साथ किया।

तेयुप अध्यक्ष अरुण नाहटा ने बताया कि कार्यक्रम में मुख्य गायक कलाकारों में राजेंद्र बोथरा, धर्मेन्द्र डागलिया, पवन छाजेड़, मनोज छाजेड़, धीरज रांका, यश बैद, चैनरूप छाजेड़, कोमल पुगलिया और प्रिया पारख ने अपनी भिक्षुमय प्रस्तुति दी। साध्वी लाभवती जी ने गीतिका के माध्यम से भिक्षु स्वामी को अपनी भावांजलि अर्पित की।

कार्यक्रम में मुख्य गायक कलाकारों को तेयुप द्वारा जैन पताका से सम्मानित किया गया। तेयुप भजन मंडली के प्रभारी विनीत बोथरा ने सभी का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन तेयुप, भजन मंडली के सहप्रभारी विपिन बोथरा ने किया।

पंचरंगी अनुष्ठान का आयोजन

मैसूर।

मुनि रश्मि कुमार जी के सान्निध्य में मैसूर तेरापंथ भवन में पंचरंगी तप आराधना कार्यक्रम आयोजित हुआ। मुनि रश्मि कुमार जी ने अणुव्रत चेतना दिवस पर कहा कि छोटे-छोटे व्रतों के पालन करने को ही अणुव्रत कहते हैं। अणुव्रत नाम को जागृत एवं जन्मदाता तेरापंथ के आचार्य तुलसी ही थे, जिन्होंने इस अणुव्रत नाम की क्रांति पूरे विश्व में जन-जन तक पहुँचाने का कार्य किया।

मुनिश्री ने अणुव्रत नाम के महत्त्व को समझाया। मुनि प्रियांशु कुमार जी ने पंचरंगी तप पर अपने उद्गार व्यक्त किए। कार्यक्रम की शुरुआत महिला मंडल के मंगलाचरण से हुई। इस अवसर पर सभा अध्यक्ष प्रकाश दक, तेयुप अध्यक्ष कमलेश गांधी ने सभी तपस्वी की तप की अनुमोदना करते हुए अपने विचार रखे। इस पंचरंगी तप में मंड्या, मैसूर, नंजुनगुड्ड, सरगूर, गुंडलपेट, के०आर० नगर के तपस्वी सहभागी रहे। लगभग ७५ से भी ज्यादा श्रद्धालुओं ने पंचोले का प्रत्याख्यान मुनिश्री से किया।

पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व आराधना

ब्यावर।

साध्वी शांताकुमारी जी 'गंगाशहर' के सान्निध्य में पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व बड़े उत्साह से मनाया गया। चारित्रात्माओं के सान्निध्य में पर्युषण महापर्व की आराधना हेतु केंद्र के द्वारा निर्धारित नवाहिनक कार्यक्रम आयोजित किए गए। जिनमें प्रत्येक दिवस की महत्ता पर चारित्रात्माओं द्वारा मंगल उद्बोधन प्रदान किया गया। प्रातःकालीन प्रवचन एवं रात्रिकालीन कार्यक्रम में श्रावक समाज उत्साह से भाग लिया। अभातेयुप के तत्त्वावधान में आयोजित अभिनव सामायिक दिवस पर तेयुप के अथक प्रयास एवं साध्वी शांताकुमारी जी की प्रेरणा से ७५ सामायिक हुई। पर्युषण महापर्व के दौरान अखंड जप, सायंकालीन सामुहिक प्रतिक्रमण का क्रम

प्रतिदिन चला।

साध्वीश्री जी की प्रेरणा से यहाँ ५८ पौषध हुए, जिनमें अष्ट प्रहरी १८ और प्रहरी १ तथा चतुर्थ प्रहरी ४० हुए। इसी क्रम में उपवास की बारी एक, बेला ४, तेला २०, चौ २, ग्यारह १, पंद्रह २, मासखमण १, वर्षीतप २, एकासन का मासखमण ४, एकांतर एक माह १, एकासन की पचरंगी २, दस प्रत्याख्यान की १० लड़ी, सामायिक पचरंगी २, रात्रिकालीन संवर ६० दिन, मौन तेला १, उपवास अनेक आदि तपस्याएँ हुई।

संवत्सरी महापर्व के दिन व्याख्यान चला। जिसमें भगवान महावीर के पंच कल्याणकों का वर्णन, चंदनबाला का रोचक प्रकरण, निह्वादा, गणधरवाद, प्रभावक, आचार्य, दस आश्चर्य, उपसर्ग एवं आचार्य परंपरा पर प्रकाश डाला।

साध्वीश्री जी ने बताया कि पर्युषण महापर्व के समय संपूर्ण जैन समाज को अधिक से अधिक धर्म आराधना कर जीवन का कल्याण करना चाहिए।

क्षमापना दिवस पर स्थानकवासी संप्रदाय की साध्वी धैर्यप्रभा जी एवं तेरापंथ धर्मसंघ की साध्वी शांताकुमारी जी एवं सहवर्ती साध्वियों एवं दोनों श्रावक समाज का आध्यात्मिक एवं स्नेहपूर्ण मिलन चातुर्मास स्थल, मूथा भवन में हुआ। साध्वीश्री जी ने क्षमापना दिवस की महत्ता को बताते हुए कहा कि यह दिन न तो पौषध करने का है और न उपवास करने का है। यह दिन तो मन की गाँठों को खोलकर एक-दूसरे से क्षमायाचना करने का है। इस प्रकार साध्वीश्री जी ने संघ का वर्धापन किया।

दीक्षार्थी का मंगलभावना समारोह

छापर।

भिक्षु साधना केंद्र के सभागार में दीक्षार्थी धनराज बैद का मंगलभावना कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर शासनश्री मुनि विजय कुमार जी ने कहा कि मनुष्य जीवन की प्राप्ति अतीव दुर्लभ है, उसमें भी त्याग की चेतना का जागना दुर्लभता है। कोई सौभाग्यशाली व्यक्ति ही संयम की परम संपदा को प्राप्त कर पाता है। ढलती उम्र में यह अवसर प्राप्त होना और ज्यादा कठिन है। आगम कहते हैं कि सब प्रकार की अनुकूलता होने पर भी जो विषय-सुखों का त्याग कर देता है, वह उत्कृष्ट त्यागी है। उत्कृष्ट त्याग का जीता-जागता उदाहरण हम धनराज बैद (राजलदेसर निवासी, दिल्ली प्रवासी) को कह सकते हैं।

आर्थिक दृष्टि से संपन्न, सब प्रकार की सुविधा, भरा-पूरा परिवार होने पर भी इन्होंने त्याग का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है। ये सबके लिए प्रेरणास्पद बन गए हैं। हमारे श्रावक-श्राविका इनके त्याग को देखकर महाव्रत धारी नहीं तो

वारहव्रती और अणुव्रती अवश्य बनें। धनराज बैद ने श्रावक की ११ प्रतिमा की साधना करके श्रावकत्व के शिखर को छू लिया। मैं मंगलकामना करता हूँ कि ये साधुत्व के शिखर तक की यात्रा करें और अपने लक्ष्य को प्राप्त करें। गुरुवर ने ७७ वर्ष की उम्र में संयम की स्वीकृति प्रदान करके इन पर बड़ी कृपा की है। गुरुओं की कृपा सदा इन पर बनी रहे। शासनश्री मुनिश्री ने पद्य और गीत के द्वारा दीक्षार्थी के प्रति मंगलकामना व्यक्त की।

धनराज बैद ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि वर्षों की मेरी भावना गुरु कृपा से फलीभूत होने जा रही है। प्रारंभ में महिला मंडल ने मंगल गीत प्रस्तुत किया। माणकचंद नाहटा, सूरजमल नाहटा, दीक्षार्थिनी सुमन बैद, महिला मंडल अध्यक्षा मंजु दुधोड़िया, तेरापंथ सभा प्रवक्ता प्रदीप सुराणा आदि ने गीत व भाषण के द्वारा अपनी मंगलभावना प्रस्तुत की। महिला मंडल ने दीक्षार्थी को मोमेंटो भेंट करक सम्मानित किया।

संस्कार निर्माण शिविर समापन दिवस

तिरुपुर।

त्रिदिवसीय शिविर का समापन समारोह का आयोजन साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा द्वारा आयोजित हुआ। इस प्रथम सत्र के अंतर्गत योगा, ध्यान आदि करवाया गया। दूसरे सत्र में साध्वी मयंकप्रभा जी ने व्यक्ति की तीन अवस्था बचपन, यौवन, वृद्धावस्था का सुंदर वर्णन किया। साध्वीश्री जी ने कहा कि बचपन का ज्ञान ५५ तक काम आता है और इस शिविर में जो कुछ सीखा वह आपकी पूँजी है।

साध्वी मेरुप्रभा जी ने गीतिका के माध्यम से अपने भावों की प्रस्तुति दी। साध्वी डॉ० अवेष्णाश्री जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ अहंकार विलीनीकरण का धर्मसंघ है। तेरापंथ धर्म का मूल सूत्र है पाँच महावत, पाँच समिति, तीन गुप्ति का पालन। कार्यक्रम का संचालन साध्वी दक्षप्रभा जी ने किया।

कार्यक्रम के तीसरे सत्र में साध्वी मयंकप्रभा जी ने नरक की यात्रा के विषय पर विस्तृत जानकारी प्रदान की। मुख्य प्रशिक्षक गौतम वेदमूथा ने छोटे-छोटे टिप्स के माध्यम से बच्चों को खुश रहने के एवं जीवन विकास की बातों को बताया। प्रियंका झाबक ने गुस्से को शांत करने के लिए कहानी एवं वक्तव्य के माध्यम से अपने भावों को प्रस्तुत किया। इसी कड़ी में चतुर्थ सत्र पैरेंट्स डे के रूप में मनाया गया। बच्चों ने अपने शिविर के अनुभवों को सबके सामने प्रस्तुत किया। इसके

पश्चात मुख्य प्रशिक्षक गौतम मूथा को तेरापंथ सभा द्वारा सम्मानित किया गया।

त्रिदिवसीय शिविर में आयोजित टेलेंट शो प्रतियोगिता में प्रथम स्थान सृष्टि खटेड़, द्वितीय स्थान हेमंत बोहरा एवं तृतीय स्थान कौशल डाकलिया ने प्राप्त किया। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान ऋषभ झाबक टीम, द्वितीय सीन कार्तिक डाकलिया टीम एवं तृतीय स्थान कीर्तन कोठारी टीम ने प्राप्त किया। इसी क्रम में सर्वश्रेष्ठ शिविरार्थी हेमंत बोहरा रहे। अनुशासित शिविरार्थी साक्षी सेठिया, संस्कारी शिविरार्थी मनन जैन, कौशल डाकलिया, सलोनी डाकलिया, ध्रुव झाबक, ऋषभ झाबक, सिद्धार्थ मालू रहे।

समापन के इस सत्र में मुख्य प्रशिक्षक गौतम वेदमूथा ने सभी के प्रति आभार

व्यक्त किया। शिविर सह-संयोजिका श्वेता कोठारी ने शिविर के अनुभवों को प्रस्तुत किया। साध्वी मेरुप्रभा जी एवं साध्वी दक्षप्रभा जी ने गीतिका के माध्यम से अपनी प्रस्तुति दी। साध्वी मयंकप्रभा जी ने शिविर के बच्चों को अपने ज्ञान को और पुष्ट करने की भावना व्यक्त की। साध्वी गवेषणाश्री जी ने शुभकामना देते हुए सभी टीम को साधुवाद दिया। अभिभावकों को धन्यवाद दिया।

शिविर संयोजक मुकेश कोठारी ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। राजश्री बोथरा, मधु झाबक, पूनम कोठारी, संतोष आंचलिया, निहारिका कोठारी, सरिता श्यामसुखा को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन सह-संयोजक जय कोठारी ने किया।

तपोभिन्दन कार्यक्रम का आयोजन

पर्वत पाटिया।

तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में साध्वी हिमश्री जी के सान्निध्य में तपोभिन्दन कार्यक्रम रखा गया। साध्वीश्री जी ने तप की महिमा के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि तपस्या करना कोई सहज काम नहीं है, तपस्या करने वाली बहन इंद्रा पुगलिया ने पखवाड़ा करके साहस का परिचय दिया है। शासनश्री साध्वी रमावती जी ने कहा कि तपस्या से कर्म की निर्जरा होती है और अभी तक इस चातुर्मासिक काल में तपस्या पर्वत पाटिया में हुई उसकी जानकारी प्रदान की। तपस्या के क्रम में-३५-१, ३०-२, २१-१, धर्मचक्र-१, वर्धमान तप, मासखमण निवी का-२, १५-६, ११-७, ६-१७, अठाई-७५, ७-१५, १६-१७, ५-६१, ४-६१, ३-४५०, २-५०० और उपवास हजारों, एकांतर मासखमण-३१, एकांतर श्रावण भादवा-६१ इतनी तपस्या अभी तक पर्वत पाटिया पर सानंद संपन्न हुई।

सभा मंत्री प्रदीप गंगा, तेयुप मंत्री पवन बुच्चा, गौतम पुगलिया, मिनाक्षी बोथरा और पुगलिया परिवार की बहनों ने तप पर अपने-अपने भाव प्रकट किए। सभा द्वारा तपस्वी बहन का सम्मान किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मुक्तियश जी ने किया। अंत में साध्वीश्री जी द्वारा तपस्वी बहन को १५ का प्रत्याख्यान और मंगलपाठ सुनाकर कार्यक्रम संपन्न किया।

रक्तदान शिविर का आयोजन

बैंगलोर।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के रक्तदान अमृत स्वर्णोत्सव के अंतर्गत 'यूनाइटेड कॉर्पोरेट्स बाई ब्लड' के उद्घाटन स्वरूप प्रथम कैंप का आयोजन किया गया। भारतीय जनता युवा मोर्चा के अध्यक्ष एवं बैंगलुरु दक्षिण से सांसद तेजस्वी सूर्या के कार्यालय के सहयोग से शालिनी ग्राउंड्स जयनगर में आयोजित कैंप में लायंस ब्लड बैंक का सहयोग प्राप्त हुआ। सांसद कार्यालय से विशालबोहरा, कर्नाटक ट्रेडर्स फेडरेशन के अध्यक्ष प्रकाश मांडोट की विशेष उपस्थिति में आयोजित कैंप में परिषद सहमंत्री संदीप चोपड़ा, सह-संयोजक दीपक कटारिया, भरत रायसोनी का विशेष श्रम नियोजित हुआ।

अध्यक्ष रजत बैद ने उपस्थित रक्तदाताओं का सम्मान किया गया। रक्तदान शिविर में उपाध्यक्ष आलोक कुंडलिया, विवेक मरोठी, निवर्तमान अध्यक्ष प्रदीप चोपड़ा, संगठन मंत्री, दीपक सुराणा, विमल धारीवाल, प्रसन्न धोका, सुधीर पोकरणा, जितेंद्र कोचर आदि उपस्थित थे। सांसद तेजस्वी सूर्या ने परिषद के इस सेवाकार्य की सराहना करते हुए आने वाले शिविरों के प्रति अपनी मंगलकामना व्यक्त की।

स्वच्छता अभियान का आयोजन

दक्षिण मुंबई।

तेरापंथ किशोर मंडल, मुंबई ने सहयोगी संगठनों के साथ मिलकर समुद्री सफाई अभियान का आयोजन किया। गिरगाँव चौपाटी में क्लीनअप ड्राइव चला। इस क्लीनअप ड्राइव में कुल १३०० से भी अधिक व्यक्ति संभागी बने। यह अद्वितीय संख्या स्वच्छता अभियान के प्रति सामाजिक जागरूकता और सहयोग के बारे में भी दर्शाती है। इस अद्वितीय अभियान में लगभग १६ टन का कचरा उठाया गया। इस क्लीनअप ड्राइव में तेरापंथ किशोर मंडल ब्लू ब्रिगेड मेंबर तन्मय झवेरी, दक्षिण मुंबई किशोर मंडल संयोजक हर्ष सिंघवी, सह-संयोजक मुदित बोलिया, बोरिवली किशोर मंडल संयोजक लव जैन आदि सदस्य सहभागी बने।

इस अभियान द्वारा एक सकारात्मक संदेश दिया और दर्शाया कि जन-जन की भागीदारी से हम अपने पर्यावरण को स्वच्छ और सुरक्षित बना सकते हैं।



सीपीएस कार्यशाला का दीक्षांत समारोह



राजनगर।

साध्वी परमयशा जी के सान्निध्य में सीपीएस कार्यशाला का दीक्षांत समारोह के कार्यक्रम का आयोजन हुआ। डॉ० साध्वी परमयशा जी ने कहा कि हर इंसान जिंदगी में सफलता की उड़ान भरना चाहता है। उसके लिए हर कार्य में चातुर्य हो, चिंतन में गांभीर्य हो, व्यवहार में माधुर्य हो, अंतःकरण में सौंदर्य हो, अध्यात्म का ऐश्वर्य हो। कोई भी व्यक्ति जन्म से विद्वान और वक्ता नहीं बनता, एक दिन में कोई आचार्य सिद्धसेन और समंतभद्र नहीं

बनता। इंसान के पास असीम ऊर्जा का पावर हाउस है। हमारे भीतर प्रतिभा है, उसे प्रोत्साहन, प्रेरणा, पुरुषार्थ प्रयत्न से तराशने-संवारने की जरूरत है। माचिक की तिली कभी न बने। अगरबत्ती की तरह सुवास फैलाएँ।

साध्वीश्री जी ने आगे कहा कि २५ प्रतिशत ऊर्जा काम में लेने वाला न कुछ के बराबर होता है, ५० प्रतिशत ऊर्जा काम में लेने वाला कुछ सफल हो जाता है, १०० प्रतिशत ऊर्जा से व्यक्ति देश और दुनिया में छा जाता है। वह

हर सपना साकार कर सकता है। ऐसे प्राणवान गतिमान इंसान ऑल द बेस्ट बन जाता है।

सीपीएस कार्यशाला अभातेयुप का एक आयाम है। यह सीपीएस प्रशिक्षण का बहुआयामी प्रकल्प है। जो गुड को बेस्ट बनाता है, साधारण को असाधारण, जीरो को हीरो की पहचान देता है। इतिहास लिखने के लिए कलम नहीं हौसलों की जरूरत होती है। तेयुप, राजनगर ने हौसलों से उड़ान प्रारंभ की। कार्यक्रम का शुभारंभ तेयुप द्वारा विजय गीत से हुआ। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने किया।

साध्वीवृंद ने गीत का संगान किया। तेयुप के अध्यक्ष भूपेश धोका ने सबका स्वागत किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा, मुख्य अतिथि सुरेश चंद्र कावड़िया, सीपीएस के राष्ट्रीय सह-प्रभारी कुलदीप कोठारी, ट्रेनर अखिल मारू, शाखा प्रभारी जितेश पोखरना ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। इस कार्यशाला में ३३ प्रतिभागियों ने भाग लिया। अंत में तेयुप, राजनगर के मंत्री कपिल बड़ोला ने आभार ज्ञापन किया।

कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला का आयोजन

हैदराबाद।

अभातेयुप द्वारा संचालित एवं तेयुप, हैदराबाद द्वारा आयोजित 'कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कोर्स' का सप्त दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी की प्रेरणा से आयोजित हुआ।

तेरापंथ सभा, सिकंदराबाद के अध्यक्ष बाबूलाल बैद एवं तेयुप अध्यक्ष निर्मल दुगड़ ने सभी प्रतिभागियों का और प्रशिक्षक जिनेश हीरावत का स्वागत किया। इस कार्यक्रम के अंतिम दिन दीक्षांत समारोह में साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि ज्ञान प्राप्त करने की कोई निर्धारित उम्र नहीं होती। ज्ञान पिपासु और ज्ञान जिज्ञासुओं के लिए उड़ने को विकास का खुला वितान होता है। उत्साह और पुरुषार्थ के संगम से वह सफलता भी प्राप्त कर लेता है।

अभातेयुप का व्यक्तित्व निर्माण के लिए सीपीएस का आयाम महत्वपूर्ण है। वक्तृत्व कला के विकास के लिए यह कोर्स वर्तमान की महनीय जरूरत है। ट्रेनर्स द्वारा ट्रेनिंग प्राप्त कर संभागीगण अपने भीतर विश्वास जागृत करते हैं। आत्मविश्वास जगाने वाली और यह प्रक्रिया काफी जनप्रिय बन रही है।

साध्वीश्री जी ने कहा कि तेयुप को हमारी प्रेरणा ने नया रंग करके दिखाया। सीपीएस कोर्स आज के समाज की विशेष माँग है। हमने देखा सभी संभागी उत्साह के साथ उपस्थित थे। इस कक्षा के लिए संभागियों के अभिभावकों का भी सक्रिय योगदान रहा। हम सौभाग्यशाली हैं, जिन्हें योग्य बनाने में गुरुदृष्टि और साधु-संतों की प्रेरणा महत्वपूर्ण आलंबन है। विकास के ऐसे अवसर जब भी मिलें अपने कदम पीछे न हटाएँ।

तेयुप, हैदराबाद कोषाध्यक्ष ललित लुनिया ने अभातेयुप उपाध्यक्ष रमेश डागा का परिचय दिया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि अभातेयुप उपाध्यक्ष रमेश डागा ने कहा कि संस्कार क्षेत्रगत सीपीएस कार्यक्रम अभातेयुप का एक महत्वपूर्ण आयाम है। साध्वी मंगलप्रज्ञा जी जहाँ भी चातुर्मास करते हैं वहाँ हर संस्था को मोटिवेट करते हैं। सीपीएस के राष्ट्रीय मुख्य प्रशिक्षक बैंगलुरु से समागत, हितेश गिरिया का परिचय सीपीएस संभागी नेहा सिंधी ने दिया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष बाबूलाल बैद एवं तेरापंथ सभा मंत्री सुशील संचेती भी इस कोर्स में सक्रियता से संभागी बने रहे। प्रतिदिन लगभग चार घंटा चली इसमें समस्त संभागीगण उत्साहित रहे।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डेली हिंदी मिलाप की सह-संपादक सरिता बैद एवं बीजेपी सीनियर लीडर चीरा श्रीकांत रहे। चीरा श्रीकांत ने कहा कि हर अभिभावक अपनी भावी पीढ़ी को संस्कार प्रदान करे। श्रम का बोधपाठ सिखाए। इस कार्यशाला के संयोजक प्रकाश दुगड़, विशाल भंडारी, ऋषभ मेहता ने संयोजन किया। साध्वीवृंद ने गीत का संगान किया। तेयुप द्वारा समस्त प्रतिभागियों को सीपीएस प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। प्रतिभागियों ने साध्वीश्री जी के सान्निध्य में समापन सत्र में अनुभव सुनाए एवं प्रसन्नता व्यक्त की। कार्यक्रम में अनेक सभा-संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं गणमान्यजन उपस्थित थे। समस्त तेयुप हैदराबाद टीम एवं किशोर मंडल टीम के श्रम से कार्यक्रम सफल रहा। तेयुप, हैदराबाद के सदस्य आलोक नाहटा ने इस कार्यक्रम में विशेष सहयोग दिया। तेयुप मंत्री रवि प्रकाश कोटेचा ने आभार व्यक्त किया।

जप तप महायज्ञ के अंतर्गत अखंड जाप

बोरावड़।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप, बोरावड़ ने जप-तप महायज्ञ का कार्यक्रम आयोजित किया। इस महायज्ञ का उद्देश्य तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य प्रवर्तक महामना भिक्षु स्वामी के चरमोत्सव के उपलक्ष्य में अपनी अभ्यर्थना समर्पित करना है।

तेयुप, बोरावड़ द्वारा इस पंचदिवसीय अखंड जाप में अपनी सहभागिता दर्ज कराते हुए साध्वी प्रांजलप्रभा जी के सान्निध्य में इस जाप का आयोजन किया गया।

साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने आचार्य भिक्षु को समर्पित गीतिका के संगान के साथ अपने उद्बोधन में कहा कि अभातेयुप द्वारा भारत वर्ष के युवाओं को आध्यात्मिक जप-अनुष्ठान में जोड़कर सराहनीय कार्य किया जा रहा है। युवाओं में अध्यात्म के प्रति उत्साह बना रहे।

तेयुप के अध्यक्ष विकास चोरड़िया ने बताया कि तेरापंथ भवन, बोरावड़ में आयोजित इस जप अनुष्ठान में समाज के सभी वर्गों ने उत्साह से भाग लिया। लगभग ३० युवकों सहित इस अनुष्ठान में १८० व्यक्तियों ने जाप कर इस अखंड अनुष्ठान में अपनी भूमिका निभाई।

'इंप्रूव योर स्किल्स' कार्यशाला का आयोजन

विजयनगर।

तेयुप के निर्देशन में किशोर मंडल, विजयनगर द्वारा तेरापंथ सभा भवन में मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में 'इंप्रूव योर स्किल्स' कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम को सीपीएस राष्ट्रीय मुख्य प्रशिक्षक, मोटिवेशनल स्पीकर अरविंद मांडोत ने संबोधित किया।

मुनिश्री द्वारा प्रदत्त मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि व्यक्ति बहुत से कार्य करता है, पर हर कार्य को कुशल स्किल्स के साथ किया जाए तो कार्य की निष्पत्ति विशेष कार्य में हो जाती है। आप जो भी कार्य करें, स्किल्स के साथ करें। हर क्षेत्र में

स्किल्स चाहिए। कौशलतापूर्वक किया गया कार्य प्रभावी एवं परिणामदायक होता है।

स्किल्स कैसे बढ़ें? इसके लिए मुनिश्री ने कहा कि कड़ी मेहनत के साथ समय प्रबंधन और स्वप्रेरणा जरूरी है। मुनिश्री ने किशोरों और कन्याओं का पर्युषण पर धर्मारोधना की प्रेरणा दी।

तेयुप अध्यक्ष राकेश पोखरना ने सबका स्वागत किया। कार्यशाला और किशोरों द्वारा नियोजित श्रम और जुड़ाव की सराहना की। महिला मंडल उपाध्यक्षा बरखा पुगलिया ने किशोर मंडल को शुभकामनाएँ प्रेषित की। मुख्य प्रशिक्षक का परिचय विशाल श्यामसुखा ने दिया। मुख्य प्रशिक्षक अरविंद मांडोत ने कार्यशाला को

व्यवहारिक रखते हुए रोजमर्रा के कार्यों को कुशलता से निष्पादित करने हेतु कुछ सूत्र बताए।

मुख्य प्रशिक्षक अरविंद मांडोत का सम्मान तेयुप पदाधिकारीगण, महिला मंडल पदाधिकारीगण, वित्त सहयोग प्रदाता मनोहरलाल बाबेल द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में परिषद, महिला मंडल, कन्या मंडल सदस्यों की अच्छी सहभागिता रही। तेयुप, विजयनगर उपाध्यक्ष एवं किशोर मंडल प्रभारी विकास बांठिया का अच्छा श्रम रहा। कार्यक्रम का संचालन किशोर मंडल संयोजक नमन चावत ने किया। आभार संयोजक रिदम चावत ने किया।

निःशुल्क चक्षु परीक्षण, चश्मा वितरण एवं मोतियाबिंद ऑपरेशन शिविर

पूर्वांचल-कोलकाता।

तेयुप, पूर्वांचल-कोलकाता ने सेवा के अंतर्गत लायंस क्लब और खुशियां फाउंडेशन के साथ मिलकर आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर में १६१ जरूरतमंद लोगों का निःशुल्क चक्षु परीक्षण किया, जिसमें से ११३ लोगों का निःशुल्क चश्मा वितरण और २० लोगों का निःशुल्क मोतियाबिंद ऑपरेशन किया जाएगा।

कार्यक्रम में अभातेयुप अध्यक्ष पंकज डागा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष-द्वितीय जयेश मेहता, राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्रेयांस कोठारी, निवर्तमान अध्यक्ष राजीव खटेड, निवर्तमान मंत्री हेमंत बैद, एटीडीसी परामर्शक रवि दुगड़ संस्कारक अनूप गंग, अध्यक्ष संदीप सेठिया, मंत्री सिद्धार्थ दुधोड़िया आदि अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम के प्रायोजक झूमरमल सेखानी परिवार ने शिविर का सहयोग दिया और इसे आगे भी सहयोग जारी रखने और निरंतर शिविर करने के लिए प्रोत्साहित किया। सेखानी परिवार को बहुत-बहुत साधुवाद। संयोजक नवीन सिंधी एवं रोहित धारेवा के अथक श्रम से शिविर सुव्यवस्थित और सफल रहा।

एडवोकेट एवं डॉक्टर्स कॉन्फ्रेंस का आयोजन

विश्वसनीयता बढ़ाने में सच्चाई का बहुत बड़ा योगदान : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन, २१ अक्टूबर, २०२३

शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन धर्म में अनेक शास्त्र हैं। उन शास्त्रों में एक आगम है—भगवती सूत्र। यह बहुत विशालकाय आगम है। ३२ आगम हमारी परंपरा में प्रमाण रूप में सम्मत हैं। उनमें अनेक वर्गीकरण हैं। एक वर्गीकरण है—अंग आगमों का। ११ आगम अंग रूप में प्रतिष्ठित हैं। उन अंग आगमों में पाँचवाँ अंग भगवई विवागपण्णति है।

भगवती जैसा सम्मानपूर्ण नाम इस आगम को प्राप्त है। इसमें विभिन्न विषय वर्णित किए गए हैं। यहाँ एक जगह बताया गया है—जीव निर्वृत्ति। हमारी इस दुनिया में दो ही तत्त्व होते हैं—जीव और अजीव। जीव है, वे अनंत काल से हैं। कभी जीव का प्रारंभ नहीं हुआ है। ये आत्मा अनेक गतियों में घूमती रहती है, जब तक मोक्ष न हो जाए जन्म परिवर्तन होता रहता है।

प्रश्न किया गया है कि जीव निर्वृत्ति कितने प्रकार की प्रज्ञप्त है। जीव निर्वृत्ति के पाँच प्रकार बताए गए हैं। वैसे जीवों को दो भागों में बाँटा गया है—सिद्ध और संसारी सिद्ध जीव जन्म-मरण की परंपरा से मुक्त होकर मोक्ष में विराजमान हो गए हैं। उनका जन्म-मरण नहीं है। वे परमात्म स्वरूप हैं। ऐसी अनंत आत्माएँ मोक्ष में स्थित हैं। वे सब निरंजन-निराकार हैं। उनके शरीर, वाणी, मन कुछ नहीं हैं। मनुष्य गति से ही



जीव मोक्ष में जा सकता है और गति से नहीं जा सकते।

देव कभी सीधे मोक्ष में नहीं जा सकते। उनको भी मनुष्य बनकर साधना करनी होती है, तो वे मोक्ष में जा सकते हैं। संसारी जीव पाँच प्रकार के बताए हैं—एकेंद्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक। वनस्पति, वायु, अग्नि, पृथ्वी और पानी ये सब एकेंद्रिय जीव हैं। वायुकाय जीव की हिंसा से बचने के लिए

हम मुख पर मुखवस्त्रिका रखते हैं।

लट-क्रीमी आदि दो इंद्रिय वाले जीव द्विन्द्रिय कहलाते हैं। कीड़े-मकोड़े आदि तीन इंद्रिय वाले जीव हैं। मक्खी-मच्छर आदि चार इंद्रिय वाले जीव हैं। मनुष्य-पशु-पक्षी, देव, नैरियक—ये सब पाँच इंद्रियों वाले जीव हैं। यह सारा जीव जगत है। अजीव जगत में भी अनेक चीजें हैं, जो हमारे काम आती हैं। उनमें कुछ तो अमूर्त है, हमें दिखाई भी

नहीं देती हैं।

अमूर्त में एक तत्त्व है धर्मास्तिकाय है, जो पूरे लोक में व्याप्त है, जो हमें गति क्रिया में सहायता करता है। दूसरा है—अधर्मास्तिकाय उसका काम है, गति को रोकना, स्थिरता देना। जहाँ छः द्रव्य हैं—वह लोक है। लोक के अंदर ही हमारी सारी दुनिया है। अलोकाकाश में सिर्फ आकाश है और कुछ नहीं है।

हम सब जीव हैं, हम सब जीवों के प्रति अहिंसा का भाव रखें। गृहस्थों के आवश्यक हिंसा हो सकती है। साधु तो पाँच महाव्रतधारी अहिंसक होते हैं। साधु को तो रात में न खाना खाना न पानी पीना। साधु तो सर्वथा अपरिग्रह होते हैं। साधुचर्या को विस्तार से समझाया। साधु उदितप्रभा जी ने पूज्यप्रवर से अठाई की तपस्या के प्रत्याख्यान लिए।

पूज्यप्रवर की सन्निधि में तेरापंथ प्रोफेशनल फॉर्म द्वारा एडवोकेट एवं डॉक्टर्स की कॉन्फ्रेंस का आयोजन हुआ, इसके मुख्य अतिथि मुंबई हाईकोर्ट के जज के०आर० श्रीराम थे। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया। राकेश बोहरा ने सभी का स्वागत किया। आज की थीम थी—सत्य नीति ही सफलता का मार्ग है। एम०एस फेडरल, जस्टिस के०आर० श्रीराम ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

पूज्यप्रवर ने फरमाया कि सच्चाई तो परमात्म पद को प्राप्त कराने वाली होती है। सच्चाई परेशान हो सकती है, पर वह परास्त नहीं हो सकती। आत्मा तो अछेद्य है। अदाध्य है, न कोई उसे भिगो सकता है न कोई उसे सुखा सकता है। सच्चाई तो अध्यात्म का एक अंग है। व्यवहार में भी सच्चाई चलती है। विश्वसनीयता बढ़ाने में सच्चाई का बड़ा योगदान है। सभी सच्चाई से अच्छा काम करते रहें। टीपीएफ भी अच्छा कार्य करता रहा।

आवश्यकता सीमित होती है और लालसा अनंत : आचार्यश्री महाश्रमण



नंदनवन, २० अक्टूबर, २०२३

तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी ने भगवती सूत्र की विवेचना करते हुए फरमाया कि सौमिल ब्राह्मण ने परम प्रभु महावीर से पूछा—भंते! वह प्रासुक विहार क्या है? भगवान ने उत्तर दिया कि सौमिल! मैं आरामो, उद्यानो, देवकुलो, सभाओं आदि वस्तियों में निवास करता हूँ, प्रासुक ऐषणीय पीठ-फलक, शैष्या संस्तारक को ग्रहण कर विहार करता हूँ वह प्रासुक विहार है।

साधु प्रवास करता है, तो साधु को

मकान व कुछ उपकरण-सामग्री आदि भी चाहिए। लंबा प्रवास या चतुर्मास हो तो अनुकूल सामग्री मिलने से प्रवास ठीक हो सकता है। स्थान भी निरवाला मिले, बसता मकान न हो। चारित्रात्मा के लिए प्रासुक विहार अनिवार्य है। प्रवचन सुनने वालों, सेवा-उपासना करने वालों को भी स्थान अच्छा मिल जाए तो वह प्रवास कल्याणकारी सिद्ध हो सकता है।

साधु की चर्या के अनुकूल सुविधाएँ मिल जाएँ तो साधु की साधना अच्छी हो सकती है। साधु भी ज्यादा सुविधाशीलता

न रखें, संतोष रखें। गृहस्थ भी संतोष का जीवन जीएँ तो शांति रह सकती है। दो शब्द हैं—Want or Need लालसा कितनी और आवश्यकता कितनी। आवश्यकता की तो पूर्ति हो सकती है। लालसा तो अनंत होती है।

सघन साधना शिविर के शिविरार्थी भी Want or Need समझें। अपेक्षा की तो पूर्ति हो सकती है। संतोष को धारण करना सीखें।

पूज्यप्रवर ने असीम कृपा कराते हुए मुमुक्षु मुकेश चिप्पड़ को मुंबई में ही ३१ जनवरी को मुनि दीक्षा प्रदान करने की घोषणा करवाई।

मुंबई अशोक नगर प्रेक्षाध्यान योग साधना केंद्र के साधकों ने इस केंद्र के सत्ताइसवें वर्ष के उपलक्ष्य में पूज्यप्रवर के दर्शन किए। पारस दुगड़ ने इसके संदर्भ में जानकारी दी। साधिकाओं ने गीत की प्रस्तुति दी। पूज्यप्रवर ने उनको आशीर्वचन फरमाते हुए निरंतरता बनी रहने की मंगलकामना की। अणुव्रतसेवी प्रो० ललीता जोगड़ ने पूज्यप्रवर के १०५१ उपनाम की बुकलेट पूज्यप्रवर को अर्पित की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

धर्म-ध्यान कर उठाएं शरीर की अनुकूलता का लाभ : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन, १६ अक्टूबर, २०२३

ध्यान-योग के साधक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि सौमिल ब्राह्मण परम वंदनीय भगवान महावीर से प्रश्न कर रहा है। सौमिल ने पूछा—भंते! वह तुम्हारा अव्याबाध क्या है? भगवान ने उत्तर दिया कि अव्याबाध ये जो वास्तिक, पैत्तिक, शैलेष्मिक, सान्निपातिक ये विविध रोग और आतंक होते हैं, वे शरीर के जो दोष हैं, उपशांत हैं, उदीर्ण नहीं हैं, वह अव्याबाध हैं।

शरीर हमारे जीवन का एक अंग है। शरीर में बाधा पैदा हो जाए तो फिर कठिनाई का अनुभव होता है। शरीर में वात-पित्त और कफ असंतुलित हो जाए तो बीमारी हो सकती है। जब वात-पित्त-कफ आदि दोष संतुलित रहते हैं, तो यह एक स्वस्थता का आयाम है। शरीर में अग्नि भी संतुलित रूप में रहे ताकि भूख भी अच्छी लगती रहे। शरीर में सात रक्त आदि सात धातुएँ हैं। वे भी संतुलित रहें। मल विसर्जन क्रिया ठीक रहे। मन प्रसन्न रहे। यह है तो आदमी स्वस्थ होता है।

जब तक शरीर ठीक है, तब तक धर्म कर लो। जब तक बुढ़ापा पीड़ित न करे, जब तक कोई बीमारी न लगे और जब तक इंद्रियाँ सक्षम हैं, तब तक बढ़िया धर्म का कार्य कर लो। शरीर में काफी अव्याबाध था तो कितनी लंबी यात्राएँ गुरुदेव तुलसी ने कर ली थीं। शरीर सक्षम है, तो उसका सार निकाल लेना चाहिए। हम अपने अव्याबाध का ध्यान रखें। खान-पान में संतुलन रखें।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने तो नवमें दशक में भी यात्राएँ की थीं। अंतिम दिन तक वे सक्रिय थे। आगम संपादन का काम भी बहुत किया था। लगता है, उनके भी अंतिम समय तक उनके शरीर में अव्याबाध था। आचार्य भिक्षु के भी जीवन को देखें, अंतिम समय तक बहुत कार्य कर लेते थे। शारीरिक सक्षमता हमारे जीवन के लिए उपयोगी होती है। शरीर की अनुकूलता का हमें धर्म के रूप में लाभ उठाना चाहिए।

पूज्यप्रवर ने प्रवचन से पूर्व अनुष्ठान-जप का प्रयोग करवाया। तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।



अध्यक्षीय

परम पावन युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुपावन श्रीचरणों में सभक्ति वंदन। श्रद्धेया साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी, श्रद्धेया मुख्य मुनिश्री महावीरकुमारजी, श्रद्धेया साध्वीवर्या सम्बुद्धयशाजी, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक वंदनीय मुनिश्री योगेशकुमारजी आदि समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में सादर वंदन।

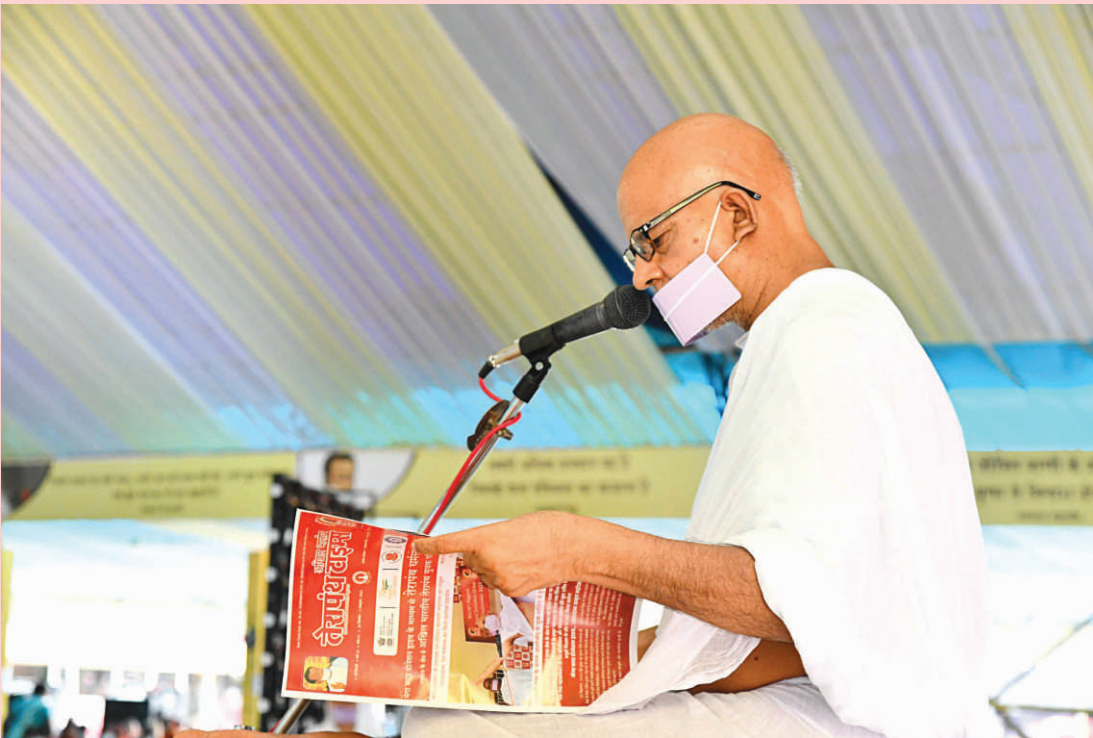
अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के सत्र 2021-23 के द्विवर्षीय कार्यकाल की सम्पन्नता पर तेरापंथ टाइम्स के इस कार्यकाल अंतिम अंक में अपनी भावनाएं सम्प्रेषित करते हुए प्रसन्नता हो रही है।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् का साप्ताहिक मुखपत्र है—'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स'। यह साप्ताहिक पत्र पूज्यप्रवर, चारित्रात्माओं एवं समण श्रेणी के सान्निध्य में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों, विभिन्न संघीय संस्थाओं के कार्यक्रमों, गतिविधियों व महत्वपूर्ण सूचनाओं का संवाहक है। परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के दैनिक प्रवचन एवं आचार्य प्रवर की पावन सन्निधि में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों के समाचार इसमें प्रमुखता से प्रकाशित होते हैं। विभिन्न केन्द्रीय व स्थानीय संघीय संस्थाओं द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की रिपोर्ट, पूज्य आचार्यों द्वारा रचित चुनिंदा पुस्तकों की सीरीज, तपस्या, चतुर्मासिक प्रवास, प्रतियोगिताएं, परीक्षाएं, विदेश, जैन संस्कार विधि, आदि तेरापंथ धर्मसंघ से सम्बन्धित विविध समाचार तेरापंथ टाइम्स प्रकाशित होते हैं। इस साप्ताहिक मुखपत्र के सभी अंक अभातेयुप के वेब पोर्टल पर ई-न्यूज लैटर के रूप में भी नियमित रूप से उपलब्ध हैं। यह तेरापंथ समाज का प्रथम ई-न्यूज लैटर है। तेरापंथ टाइम्स के किसी भी अंक को जब चाहे तब ई-न्यूज लैटर के रूप में पढ़ा जा सकता है। त्वरित कवरेज, सुनियोजित संकलन एवं सुव्यवस्थित प्रस्तुतिकरण के माध्यम से संघीय समाचारों के इस मुखपत्र ने तेरापंथ समाज में अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई है।

इस द्विवर्षीय कार्यकाल में साप्ताहिक नियमित प्रकाशन क्रम के साथ परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के षष्टिपूर्ति, 50वें दीक्षा दिवस 'युवा दिवस', युगप्रधान अलंकरण समारोह, 'शासनमाता' साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी महाप्रयाण, साध्वी प्रमुखा पदारोहण समारोह आदि विशेष अवसरों पर तेरापंथ टाइम्स के विशेषांक प्रकाशित किए गए। इस कार्यकाल में तेरापंथ टाइम्स निःशुल्क प्रेषण व्यवस्था में थोड़ा परिवर्तन किया गया। अब लिखित सूचना के आधार पर ही पाठकों को तेरापंथ टाइम्स निःशुल्क नियमित रूप से भेजा जा रहा है। तेरापंथ टाइम्स का आर.एन.आई से संबंधित एक लम्बित कार्य पूर्ण कराया गया। इस कार्य में श्री राजीव सुराणा से प्राप्त सेवाओं एवं सहयोग हेतु आभार।

तेरापंथ टाइम्स को परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी का समय-समय पर आशीर्वाद प्राप्त होता रहता है। गत वर्ष तेरापंथ टाइम्स की उपयोगिता के संदर्भ में उद्गार व्यक्त करते हुए परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने फरमाया— 'तेरापंथ टाइम्स समाचारों की दृष्टि से बहुत उपयोगी है। थोड़े में देखना हो तो गुरुकुलवास के भी समाचार आ जाते हैं, बाहर के भी आ जाते हैं। तेरापंथ समाज के संक्षेप में गतिविधियां एवं समाचार जानना हो तो तेरापंथ टाइम्स काफी उपयोगी लग रहा है। संक्षेप में देख लो, विस्तार से पढ़ लो, जैसे पढ़ना हो वैसे पढ़ लो। तेरापंथ टाइम्स थोड़े में तेरापंथ का दर्पण है। तेरापंथ समाज का अच्छा अखबार है। तेरापंथ समाज के लोग पढ़ें, अन्य समाज के लोग भी तेरापंथ समाज के समाचार जानने हेतु इस समाचार पत्र को पढ़ सकते हैं। आम जनता के लिए तेरापंथ टाइम्स एक रोचक, जानकारी देने वाला और उपयोगी अखबार प्रतीत हो रहा है।' पूज्य प्रवर से प्राप्त आशीर्वाद एवं कृपा दृष्टि हेतु सादर कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं। मुनिश्री दिनेशकुमारजी, अभातेयुप आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री योगेशकुमारजी, मुनिश्री नयकुमारजी द्वारा समय-समय पर प्राप्त दिशा बोध हेतु कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं। तेरापंथ टाइम्स के कार्यकारी संपादक श्री दिनेश मरोठी जिस मनोयोग एवं दायित्व निष्ठा से इसके संपादन कार्य से जुड़े रहे, वह निश्चित रूप से उल्लेखनीय है। उनकी दायित्व निष्ठा एवं श्रम निष्ठा हेतु हार्दिक आभार। अभातेयुप के प्रकाशन राष्ट्रीय प्रभारी श्री जितेन्द्र परमार एवं राष्ट्रीय सहप्रभारी श्री अमित सेठिया से प्राप्त सेवाओं हेतु आभार। तेरापंथ टाइम्स के प्रेषण, व्यवस्था, सरकारी आदि से संबंधित विभिन्न कार्यों में अभातेयुप दिल्ली कार्यालय के प्रभारी श्री जतन श्यामसुखा से निरंतर प्राप्त सहयोग एवं सेवाओं हेतु आभार। तेरापंथ टाइम्स की प्रेषण सूची को व्यवस्थित एवं नियमित अपडेट रखते हुए पूरी एड्रेस लिस्ट दिल्ली कार्यालय भेजकर लम्बे समय से सेवाएं प्रदान करने वाले श्री विमल गुलगुलिया के प्रति आभार। विभिन्न अनुदानदाताओं के सहयोग हेतु आभार। तेरापंथ टाइम्स का मूलतः सारा कार्य दिल्ली कार्यालय से दिनेश शर्मा के द्वारा किया जा रहा है। सक्रियतापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु उनको साधुवाद। इस वर्ष कुछ अंकों का कार्य लाडनू कार्यालय से प्रबंधक श्री राजेन्द्र खटेड़ की देखरेख में सम्पन्न हुआ, इस हेतु उनके एवं लाडनू कार्यालय टीम के प्रति साधुवाद। कार्यकाल के दौरान तेरापंथ टाइम्स के संदर्भ में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से प्राप्त सभी सहयोगीगण के प्रति आभार। प्रकाशन संबंधी कोई त्रुटि रही हो या समाचारों का प्रकाशन किसी कारणवश नहीं हो पाया हो या विलंब से हुआ हो तो मैं सभी से खमत-खामणा करता हूं। अभातेयुप के आगामी नवनेतृत्व एवं तेरापंथ टाइम्स की आने वाली संपादकीय टीम के प्रति मंगलकामना करता हूं।

— पंकज डागा
प्रधान संपादक



संपादकीय

तेरापंथ धर्मसंघ के संघीय समाचारों को जन-जन तक पहुंचाने का माध्यम है—अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स। मैं स्वयं को सौभाग्यशाली मानता हूँ कि मुझे कार्यकारी संपादक के रूप में यह पुनीत कार्य करने का सुअवसर मिला।

अनंत कृतज्ञता के भावों के साथ परमपूज्य आचार्यप्रवर के श्रीचरणों में वंदना। आपश्री के पावन आशीर्वाद एवं कृपादृष्टि से मुझे राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकजजी डागा ने यह कार्य करने का अवसर प्रदान किया।

गत राष्ट्रीय अधिवेशन में आचार्यप्रवर द्वारा फरमाए गए शब्द—'तेरापंथ धर्मसंघ का दर्पण है—तेरापंथ टाइम्स' मेरे लिए जीवन की अमूल्य धरोहर बन गए। आचार्यप्रवर ने आगे फरमाया कि तेरापंथ धर्मसंघ के लिए एवं श्रावक समाज के लिए रोचक और उपयोगी अखबार है—तेरापंथ टाइम्स। परमपूज्य आचार्यप्रवर के ये उद्गार तेरापंथ टाइम्स की उपयोगिता के द्योतक हैं।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स तेरापंथ धर्मसंघ की सभी संस्थाओं—महासभा, प्रोफेशनल फोरम, महिला मंडल, अभातेयुप, ज्ञानशाला, अणुव्रत समिति एवं स्थानीय सभाओं के सभी समाचार एवं धर्मसंघ के विशिष्ट अवसरों पर चारित्रात्माओं की रचनाओं को धर्मसंघ के हर श्रावक-श्राविका तक पहुंचाने में अहम कड़ी है।

साप्ताहिक प्रकाशन के इस उपक्रम से जुड़ने से मुझे आचार्यप्रवर, साध्वीप्रमुखाश्री सहित देश-भर में विराजित चारित्रात्माओं द्वारा फरमाए गए प्रवचन पढ़ने का लाभ मिला, उसे अपने शब्दों में लिखने का अवसर मिला जो मेरे जीवन की अमूल्य धरोहर बन गया। इस दौरान शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्रीजी के लिए विशेषांक हो या अन्य विशेष अवसर जब भी विशेषांक निकलता तो बहुत-सी नवीन जानकारियां मिलती, जिनमें ज्ञान की अभिवृद्धि तो होती ही अपितु उस व्यक्तित्व के बारे में और अधिक जानने का अवसर भी मिलता है।

कार्य संपादन में कभी शाबाशी तो कभी उलाहना भी मिलता, शाबाशी और अधिक कार्य करने की प्रेरणा देती तो उलाहना भूल सुधार करने और आगे बढ़ने में सहायक बनता।

अनंतान कृतज्ञता आचार्यप्रवर के चरणों में जिनकी कृपा दृष्टि सदैव बनी रही। शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी का विशेष वात्सल्य सुखद अनुभूति प्रदान करता। अनंत कृतज्ञता पुण्यात्मा के प्रति।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी एवं मुख्य मुनि महावीर कुमार जी का आशीर्वाद और मार्गदर्शन मेरे दायित्व को दृढ़ता से करने की प्रेरणा देता, तदर्थ कृतज्ञता।

मुनि दिनेश कुमार जी, अभातेयुप आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेश कुमार जी, मुनि नयकुमार जी के प्रति कृतज्ञता जिनका सतत मार्गदर्शन और उत्साहवर्धन एवं नव ऊर्जा का संचार करता।

संपादन कार्य में श्री इंद्र बैंगानी, श्री हनुमान दुगड़, श्री राजेंद्र खटेड़, श्री कमल शर्मा, श्री आर्यन रांका, श्री दिनेश शर्मा का अतुलनीय सहयोग प्राप्त हुआ, जिससे यह कार्य और अधिक सुलभ हो गया। तदर्थ आभार।

विशेष आभार राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पंकज डागा, महामंत्री श्री पवन मांडोत एवं संपूर्ण अभातेयुप परिवार का जिन्होंने मुझे यह कार्य करने के लिए खुला आसमान दिया और हर तरह से सहयोग प्रदान किया।

संस्थागत या क्षेत्रीय समाचारों के प्रकाशन में चारित्रात्माओं द्वारा प्रदत्त रचनाओं के प्रकाशन में यदि प्रमादवश कोई भूल की हो या समाचारों को उचित स्थान नहीं दे पाया तो मैं सरल हृदय से चतुर्विध धर्मसंघ से खमतखामणा करता हूँ।

विशेष धन्यवाद मेरे माता-पिता श्रीमती संतोष देवी-दुलीचंदजी मरोठी को जिन्होंने मुझे धार्मिक संस्कार प्रदान किए। आभार मेरी धर्मसहायिका रेखा मरोठी, पुत्रिया, प्रज्ञा-प्रेक्षा एवं पुत्र राजवीर को जिन्होंने मुझे दायित्व निर्वहन में सहयोग प्रदान किया।

तेरापंथ टाइम्स से जुड़ना मेरे लिए अविस्मरणीय और सुखद रहा। अविस्मरणीय इसलिए कि इसके माध्यम से धर्मसंघ को नजदीक से जानने का अवसर मिला और सुखद इसलिए कि यह मेरे ज्ञान और संस्कारों की श्रीवृद्धि करने का कारण बना।

अभातेयुप के नव नेतृत्व के साथ नई प्रकाशन और संपादकीय टीम को सफलताम कार्यकाल की अग्रिम बधाई और मंगलकामना।

तेरापंथ टाइम्स हर तेरापंथी परिवार, श्रावक-श्राविका का गौरव बने। लोकप्रियता के नव इतिहास रचे।

मंगलकामना शुभकामना।

— दिनेश मरोठी
कार्यकारी संपादक

